पवित्र क़ुर्आन-मजीद

- की -

कुछ निर्वाचित आयतें

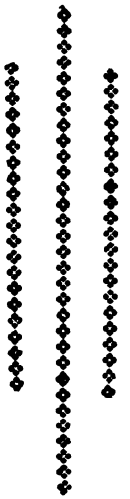

PUBLISHED BY
ISLAM INTERNATIONAL PUBLICATIONS LIMITED

© Islam International Publications Ltd.

1 85372 012 7

1988

Printed by
RAQEEM PRESS
Islamabad, Sheephatch Lane, Tilford, Surrey GU 10 2AQ U.K.

अन्तर्राष्ट्रीय अहमदिया सम्प्रदाय
की प्रथम शताब्दी समारोह
की खुशी में

★

एकेश्वरवाद के मंतव्य के प्रचार एवं प्रसार की
मुहब्बत के अपराध में कठोर दण्ड पाने
वाले तथा ईश्वर की राह में प्राण
निछावर करने वाले शहीद एवं
बिलाल के पद-चिन्हों पर

अग्रसर

अहमदी मुसलमानों

की

ओर से एक पवित्र भेंट !

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ नं०
१.	अल्लाह, ईश्वर	७
२.	फ़रिश्ते	१४
३.	पवित्र क़ुर्आन-मजीद	१७
४.	पैग़म्बर, अवतार	२२
५.	इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम	३१
६.	उपासना	३६
७.	रोज़ा, व्रत	३९
८.	ईश्वर की राह में ख़र्च करना	४१
९.	हज्ज—तीर्थ यात्रा तथा काबा—ईश्वर का घर	४५
१०.	समस्त मानव जाति को पवित्र सन्देश पहुँचाना	४८
११.	नैतिकता तथा शिष्टाचार	५१
१२.	इस्लाम की आर्थिक प्रणाली के मूल सिद्धान्त	५८
१३.	जिहाद—ईश्वर की राह में प्रयत्नशील होना	६१
१४.	ईमान लाने वालों का चरित्र	६५
१५.	स्त्री एवं पुरुष के लिए समानाधिकार	६९
१६.	ब्याज एवं मदिरापान की निषेधात्मक शिक्षाएँ	७२
१७.	भविष्यवाणियाँ	७५
१८.	प्रकृति से सम्बन्धित निरीक्षण	७९
१९.	पवित्र क़ुर्आन-मजीद में सिखाई गई कुछ प्रार्थनाएँ	८४
२०.	पवित्र क़ुर्आन-मजीद की कुछ छोटी-छोटी सूरतें जो सरलता पूर्वक याद की जा सकें	८८

भूमिका

पवित्र क़ुर्आन-मजीद की हर-एक आयत का एक साधारण और स्पष्ट अर्थ है तथा पाठक इस के अनुवाद को पहली बार पढ़ कर ही इस के उत्तम उद्देश्यों के महत्व पर विचार कर सकता है। हर-एक आयत व्यापक संयुक्त प्रणाली का एक हिस्सा है जो अधिक से अधिक छिपे हुए तुलनात्मक विषयों से सुसज्जित है।

इसी प्रकार एक आयत का विषय दूसरी आयत और सूरः के साथ व्यापक संचार प्रणाली की तरह जुड़ा रहता है।

उपरोक्त विवरण से दो बातें स्पष्ट हैं :—

(क) यद्यपि अनुवाद कितना ही सुन्दर और उचित क्यों न हो, पवित्र क़ुर्आन जैसी मार्मिक विषयों से सुसज्जित किताब के अर्थों को समझाने में यह आंशिक सहायता ही कर सकता है। वास्तव में यह दावा करना असम्भव है कि कोई एक अनुवाद पवित्र क़ुर्आन के व्यापक सन्देश को पूर्ण रूप से पाठक तक पहुँचाने के लिए पर्याप्त है।

(ख) पवित्र क़ुर्आन-मजीद के किसी एक विषय से सम्बन्धित कुछ आयतों को चुन कर सम्बन्धित विषय का पूर्णतयः प्रतिनिधित्व समझना उपरोक्त असम्भव दावे से भी कठिन है। उदाहरण के रूप में यदि पवित्र क़ुर्आन-मजीद में बताई गई आर्थिक प्रणाली से सम्बन्धित कुछ आयतें चुन ली जाएँ तो उपरोक्त लिखित कारणों से कार्य में बाधाएँ आएँगी तथा इसलिए भी कि इस्लाम की आर्थिक प्रणाली की दर्शन-भूमि पवित्र क़ुर्आन-मजीद के विशाल क्षेत्र में फैली हुई है जिस का अर्थ शास्त्र से सीधा सम्बन्ध नहीं।

जब हम इस तथ्य पर विचार करते हैं कि संसार की अधिकतर जनसंख्या विभिन्न भाषाएँ बोलती है तथा विभिन्न संस्कृति से सम्बन्ध रखती है तथा विभिन्न जातियाँ एवं समुदाय इस आश्चर्यजनक किताब के पढ़ने से वञ्चित हैं तो अनुवाद

की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है। वास्तव में यह दुःख की बात है कि पिछली चौदह शताब्दियों में पवित्र क़ुर्आन-मजीद का ६५ से अधिक भाषाओं में अनुवाद नहीं किया गया जब कि 'बाइबिल सोसाइटीज़' की रिपोर्ट के अनुसार बाइबिल का अनुवाद १८०८ भाषाओं में किया गया।

इसलिए संसार भर में फैले हुए अहमदिय्या मुस्लिम सम्प्रदाय ने १९८९ तक जो कि अहमदिय्या मुस्लिम सम्प्रदाय का सौ वर्षीय स्थापना वर्ष होगा, संसार में अधिकतर बोली जाने वाली कम से कम ५० भाषाओं में पवित्र क़ुर्आन-मजीद का अनुवाद करने का सँकल्प किया हुआ है।

इस के अतिरिक्त यह कोशिश भी की जा रही है कि जब तक अनुवाद का काम पूरा नहीं हो जाता तब तक दूसरी भाषाएँ बोलने वालों को पवित्र क़ुर्आन-मजीद के कुछ भाग उन की अपनी भाषाओं में प्रस्तुत किए जाएँ। इस कार्य को ठीक ढंग से करने के लिए प्रत्येक विषय को अपने समक्ष रखते हुए पवित्र क़ुर्आन-मजीद की आयतों का चुनाव किया जा रहा है ताकि उन पाठकों को जो इस्लाम के सिद्धान्तों से परिचित नहीं, इस्लाम की मौलिक एवं प्रमुख सिद्धान्तों से उन्हें अवगत कराया जा सके।

हम आशा करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना भी करते हैं कि जहाँ हमारी यह कोशिश एक जिज्ञासु की आध्यात्मिक प्यास बुझाने में सफल होगी वहाँ पवित्र क़ुर्आन-मजीद जो कि ईश्वरीय वाणी है, में विद्यमान पूर्ण मार्ग-दर्शन को सीखने की इच्छा को भी उभारेगी।

आयतों का चुनाव निम्नलिखित महत्वपूर्ण विषयों के आधार पर किया गया है :—

१. अल्लाह, ईश्वर।
२. फ़रिश्ते।
३. पवित्र क़ुर्आन-मजीद।
४. पैग़म्बर, अवतार।
५. इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम।
६. उपासना।

७. रोज़ा, व्रत ।
८. ईश्वर की राह में ख़र्च करना ।
९. हज्ज—तीर्थ यात्रा तथा काबा—ईश्वर का घर ।
१०. समस्त मानव जाति को पवित्र सन्देश पहुँचाना ।
११. नैतिकता तथा शिष्टाचार ।
१२. इस्लाम की आर्थिक प्रणाली के मूल सिद्धान्त
१३. जिहाद—ईश्वर की राह में प्रयत्नशील होना ।
१४. ईमान लाने वालों का चरित्र ।
१५. स्त्री एवं पुरुष के लिए समानाधिकार ।
१६. ब्याज एवं मदिरापान की निषेधात्मक शिक्षाएँ ।
१७. भविष्यवाणियाँ ।
१८. प्रकृति से सम्बन्धित निरीक्षण ।
१९. पवित्र क़ुर्आन-मजीद में सिखाई गई कुछ प्रार्थनाएँ ।
२०. पवित्र क़ुर्आन मजीद की कुछ छोटी-छोटी सूरतें जो सरलता पूर्वक याद की जा सकें ।

ईश्वर की अपार कृपा एवं दया से अहमदिय्या मुस्लिम सम्प्रदाय की ओर से पवित्र क़ुर्आन-मजीद के निम्नलिखित भाषाओं में अनुवाद इस से पूर्व ही प्रस्तुत किए जा चुके हैं ।

बंगाली, डैनिश, डच, इंग्लिश, फ़ैन्टी, फ़िज़ियन, फ्रांसीसी, जर्मन, गुरमुखी, हौसा, हिन्दी, इन्डोनेशियन, इटैलियन, किकूयू, लुगैण्डा, पुर्तगेज़ी, रूसी, स्प्राण्टो स्वाहिन्ली, स्वीडिश, उर्दू, युरुबा ।

इस संदर्भ में यह लिख देना भी अनुचित न होगा कि पवित्र क़ुर्आन-मजीद का हिन्दी अनुवाद भारतवासियों विशेषकर हिन्दी जगत के महानुभावों की आध्यात्मिक तृष्णा को तृप्त करने में विशेष स्थान प्राप्त करेगा ।

हम यह भी घोषणा करते हुए प्रसन्नता अनुभव करते हैं कि २० अन्य भाषाओं में अनुवाद लगभग तय्यार हैं तथा ईश्वर की कृपा से शीघ्र ही छपवा कर प्रस्तुत किए जाएँगे । ये भाषाएँ निम्नलिखित हैं :—

अल्बानिया, आसामी, उड़िया, चीनी, गुजराती, जापानी, कोरियन, मलेशियन, माण्डली, मराठी, नारवेजियन, पश्तो, पोलिश, सिन्धी, स्पेनिश, स्वीडिश, तामिल, तेलगू, तुर्की, वेतनामी, कन्नड़ी।

विभिन्न भाषाओं में पवित्र कुर्आन-मजीद की प्राप्ति के सम्बन्ध में जानकारी के लिए प्रकाशक अथवा संसार के किसी भी अहमदिय्या मुस्लिम मिशन से सम्पर्क स्थापित करें।

इस बात का ध्यान रखा जाए कि जिन शीर्षकों के साथ पवित्र कुर्आन-मज़ीद की आयतों को प्रस्तुत किया जा रहा है वे शीर्षक पवित्र क़ुर्आन-मजीद की आयतों के भाग नहीं हैं। इसलिए उनको स्पष्ट रूप से अलग कर के दिखाया गया है।

इस संग्रह में आयतों का चुनाव अहमदिय्या मुस्लिम सम्प्रदाय के अधिनायक हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ने किया है।

अल्लाह-ईश्वर

"अल्लाह" एक सर्वश्रेष्ठ सत्ता का नाम है। अरबी भाषा में "अल्लाह" शब्द किसी सजीव अथवा निर्जीव वस्तु के लिए कभी भी प्रयोग नहीं होता। अन्य भाषाओं में अल्लाह के स्थान पर जो शब्द प्रयोग होते हैं वह उस के गुणों को प्रकट करने वाले तथा उसकी महिमा को दर्शाने वाले होते हैं और साधारणतया बहुवचन के रूप में प्रयोग होते हैं। "अल्लाह" शब्द बहुवचन के रूप में कभी भी प्रयोग नहीं होता। हिन्दी भाषा में इसके लिए उचित शब्द न होने के कारण अनुवाद में "अल्लाह" शब्द ही का प्रयोग किया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ
صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○
الفاتحة : ١-٧

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।

हर प्रकार की स्तुति का केवल अल्लाह ही अधिकारी है जो सब लोकों (जह्रानों) का रब्ब है।

अत्यन्त कृपा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।

जज़ा (अच्छा बदला देने) तथा सज़ा (दण्ड देने) के समय का मालिक है।

(हे अल्लाह !) हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ से ही सहायता माँगते हैं।

हमें सीधी राह पर चला।

उन लोगों की राह पर (चला) जिन पर तूने इन्आम किया (अर्थात् जिन को पुरस्कार प्रदान किया) जिन पर बाद में न तो तेरा ग़ज़ब (प्रकोप) उतरा और न वे (बाद में) गुमराह हो गए हैं। (अल्-फ़ातिह: १-७)

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ○
لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۚ
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ○
هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ
بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ○

आसमानों तथा ज़मीन में जो कुछ है वह अल्लाह का यशोगान कर रहा है और वह प्रभुत्वशाली एवं तत्त्वदर्शी है।

आसमानों तथा ज़मीन की हुकूमत उसी की है। वह जीवित करता है तथा मारता भी है और वह प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व रखता है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي
الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ
السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا
كُنْتُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝
لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝
يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي
الَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝
اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ
مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ
اَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

الحديد : ٢-٨

वह आदि भी है और अन्त भी तथा प्रत्यक्ष भी है और अप्रत्यक्ष भी और वह हर-एक चीज़ को जानता है।

उसी ने आसमानों तथा ज़मीन को छः वक्तों (अर्थात् दौरों) में पैदा किया है, फिर वह अर्श पर मज़बूती से क़ायम हो गया। वह उसे भी जानता है जो धरती में प्रवेश होता है तथा उसे भी जो उस से निकलता है और उसे भी जो आकाश से उतरता है और उसे भी जो उस की ओर चढ़ता है और तुम जहाँ भी जाओ वह तुम्हारे साथ रहता है और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है।

आसमानों और ज़मीन की हुकूमत भी उसी की है और सारी बातें उसी की ओर (निर्णय के लिए) लौटाई जाएँगी।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي
الَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

वह रात को दिन में समो देता है तथा दिन को रात में और वह दिलों की बातों को भली-भाँति जानता है।

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ
مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا
لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

हे लोगो! अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और तुम्हें (पहली जातियों के बाद) जिस (सम्पत्ति) का मालिक बनाया है उस में से ख़र्च करो और तुम में से जो लोग मोमिन हैं और वे अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहते है उन्हें बहुत बड़ा प्रतिफल मिलेगा। (अल्-हदीद २–८)

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝
التغابن : ٢-٥

आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह की स्तुति कर रहा है। राज्य भी उसी का है और स्तुति भी उसी की है तथा वह हर-चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया। सो तुम में से कोई तो इन्कार करने वाला बन जाता है तथा कोई ईमान लाने वाला बन जाता है और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है।

उस ने आसमानों और ज़मीन को एक विशेष उद्देश्य के लिए पैदा किया है और उसी ने तुम्हारे रूप-रंग बनाए हैं तथा तुम्हारे रूप-रंग को अति उत्तम बनाया है और उसी की ओर तुम्हें लौट कर जाना है।

आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह उसे जानता है और उस काम को भी जानता है जिसे तुम छिपाते हो अथवा प्रकट करते हो तथा अल्लाह दिल की बातों को भी जानता है। (अल्-तग़ाबुन|२-५)

إِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَأَنّٰى تُؤْفَكُونَ ۝ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

निस्सन्देह अल्लाह बीज और गुठलियों को फाड़ने वाला है। वह सजीव को निर्जीव से निकालता है और निर्जीव को सजीव से निकालने वाला है। तुम्हारा अल्लाह तो ऐसा है। अतः बताओ तुम कहाँ से वापस लौटाए जाते हो ?।

वह सुबह को ज़ाहिर करने वाला है और उस ने रात को विश्राम का साधन तथा सूर्य

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۔ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ○

एवं चन्द्रमा को गणित का आधार बनाया है। यह अनुमान उस का है जो ग़ालिब और बहुत जानने वाला है।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّ مُسْتَوْدَعٌ ۔ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ○

और वही है जिस ने तुम्हारे लिए नक्षत्रों की रचना की है ताकि तुम उन के द्वारा विपत्ति के समय जल और स्थल में राह पा सको। हम ने ज्ञान रखने वाली जाति के लिए अपने निशान खोल-खोल कर बता दिए हैं।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۔ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۔ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۔ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۔ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ○

और वही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया है, फिर उस ने तुम्हारे लिए एक अस्थायी निवास-स्थान एवं एक लम्बे समय के लिए निवास-स्थान नियुक्त किया है। हम ने बुद्धिमानों के लिए प्रमाण खोल-खोल कर बता दिए हैं।

और वही है जिस ने आकाश से पानी उतारा है। फिर (देखो किस प्रकार) उस के द्वारा हम ने हर प्रकार की वनस्पति उगाई है और उस के द्वारा खेती पैदा की, जिस से हम तले-ऊपर चढ़े हुए दाने निकालते हैं तथा खजूर के गाभे में से लटकते हुए गुच्छे निकालते हैं और अंगूर एवं ज़ैतून तथा अनार के ऐसे बाग़ निकालते हैं जिन में से कुछ आपस में एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं और कुछ एक-दूसरे से विभिन्न हैं। जब (उन में से प्रत्येक प्रकार के वृक्षों को) फल लगता है तो उस के फल को तथा उस के पकने (की अवस्था) को देखो। निस्सन्देह उस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए अनेक प्रमाण हैं।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَ
خَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ
سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝
الانعام : ٩٦-١٠١

और उन्हों ने अल्लाह के साथ जिन्नों में से साझी ठहराए हुए हैं। वास्तविक बात तो यह है कि उस (अल्लाह) ने उन्हें पैदा किया है और उन्हों ने उस के लिए बिना ज्ञान के झूठ-मूठ ही पुत्र-पुत्रियाँ बनाई हैं। वह पवित्र है तथा जो कुछ वे वर्णन करते हैं उस से वह बहुत ऊँचा है।
(अल्-अन्आम/९६-१०१)

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا
تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ
اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ
اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِىُّ
الْعَظِيْمُ ۝
البقرة : ٢٥٦

अल्लाह—वह है जिस के सिवा दूसरा कोई भी पूजा के योग्य नहीं। वह कामिल ज़िन्दगी वाला, सदा क़ायम रहने वाला एवं दूसरों को क़ायम रखने वाला है। उसे न ऊँघ आती है और न नींद आती है। जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब उसी का है। कौन है जो उस की आज्ञा के बिना उस के पास सिफ़ारिश करे? जो कुछ उन के सामने है तथा जो कुछ उन के पीछे है वह (सब कुछ) जानता है और वे उस की इच्छा के बिना उस के ज्ञान का अंश मात्र भी प्राप्त नहीं कर सकते। उस का ज्ञान आसमानों पर भी और ज़मीन पर भी व्यापक है तथा उन की रक्षा (करना) उसे थकाती नहीं एवं वह बड़ी शान रखने वाला और महिमाशाली है।
(अल्-बक़र: २५६)

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝

अल्लाह ही है जिस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह परोक्ष और अपरोक्ष को जानता है। वही अनन्त कृपा करने वाला है और वही बार-बार दया करने वाला है।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

الحشر: ٢٣-٢٥

(सत्य यह है कि) अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह बादशाह है, स्वयं पवित्र है (तथा दूसरों को पवित्र करता है)। वह निष्कलंक है (तथा दूसरों को सुरक्षित रखता है)। वह सब को शान्ति देने वाला है और सब का निरीक्षक है। प्रभुत्वशाली है तथा टूटे हुए समस्त दिलों को जोड़ता है। बड़ा महिमाशाली है। ये लोग जिन पदार्थों को उस का साझी ठहराते हैं, अल्लाह उन सब से पवित्र है।

(सत्य यही है कि) अल्लाह हर चीज़ को पैदा करने वाला तथा सब पदार्थों का आविष्कारक भी है और प्रत्येक वस्तु को उस की स्थिति के अनुसार उसे आकृति एवं रूप प्रदान करने वाला है। उस के अनेक उत्तम गुण हैं। जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है उसी की स्तुति कर रहा है और वह प्रभुत्वशाली एवं तत्त्वदर्शी है। (अल्-हश्र २३-२५)

फ़रिश्ते

अरबी भाषा में फ़रिश्ते के लिए "मलक" शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ सन्देश पहुँचाने वाले और प्रतिनिधि के हैं। इस से फ़रिश्तों की उत्पत्ति का उद्देश्य प्रकट होता है। फ़रिश्ते अल्लाह का सन्देश लाते हैं और उसकी इच्छा को संसार में लागू करते हैं इसलिए वे सृष्टि की व्यवस्था का ही एक हिस्सा हैं जिन्हें अल्लाह ने इसलिए नियुक्त किया है कि वे लौकिक एवं अलौकिक संसार में उस की इच्छा को लागू करें। अलौकिक संसार पर फ़रिश्तों का प्रभाव सीधा पड़ता है और उनके बीच कोई हस्तक्षेप नहीं करता। फ़रिश्तों पर विश्वास न करने का अर्थ यह होगा कि अल्लाह की ओर से मानव को उपलब्ध प्रकाश के साधन को बन्द किया जाए।

हर प्रकार की स्तुति अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों तथा ज़मीन को(एक नवीन व्यवस्था के अनुसार) पैदा करने वाला है और फ़रिश्तों को ऐसी परिस्थिति में रसूल बना कर भेजने वाला है जब कि उन के पंख कभी तो दो-दो होते हैं और कभी तीन-तीन और कभी चार-चार। (उन फ़रिश्तों के पंख) पैदा करने में वह (अल्लाह) जितनी चाहता है बढ़ोतरी कर देता है। अल्लाह प्रत्येक बात के करने पर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।
(अल्-फ़ातिर २)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَ ثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِى الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝

فاطر : ٢

तू (उन से) कह दे कि जो व्यक्ति जिब्राईल का इसलिए विरोधी हो कि उस ने तेरे दिल पर इस (क़ुर्आन) को अल्लाह के आदेश के अनुसार उतारा है जो उस (ईशवाणी) को सत्य सिद्ध करने वाला है जो इस से पहले मौजूद है और वह मोमिनों के लिए हिदायत एवं शुभ सूचना है।

(याद रहे कि) जो व्यक्ति अल्लाह और उसके फ़रिश्तों तथा उसके रसूलों, जिब्राईल और मिकाईल का शत्रु हो तो निस्सन्देह ऐसे इन्कार करने वालों का अल्लाह भी शत्रु है।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَ هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ جِبْرِيْلَ وَ مِيْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝

البقرة : ٩٨-٩٩

तुम्हारा पूर्व और पश्चिम की ओर मुँह करना कोई बड़ी नेकी नहीं है, परन्तु कामिल नेक वह व्यक्ति है जो अल्लाह, आख़िरत, फ़रिश्तों, ईश्रीय किताब और सब नबियों पर ईमान रखे और उस के प्रेम के कारण निकट नातेदारों और अनाथों और निर्धनों

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَ النَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنَ وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَ

السَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ، وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ
وَاٰتَى الزَّكٰوةَ، وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا
عٰهَدُوْا، وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ
وَحِيْنَ الْبَاْسِ، اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا،
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ○

البقرة : ١٧٨

और मुसाफ़िरों और माँगने वालों और दासों (की स्वतन्त्रता) के लिए अपना धन दे और नमाज़ को क़ायम रखे और ज़कात दे और अपनी प्रतिज्ञा को, जब भी वे (किसी प्रकार की कोई) प्रतिज्ञा करें, उसे पूरा करने वाले और विशेष कर निर्धनता, रोग और युद्ध के समय धैर्य से काम लेने वाले (कामिल नेक) हैं। यही लोग हैं जो (अपने कथन में) सच्चे सिद्ध हुए हैं और ये लोग पूर्ण रूप से संयमी हैं।

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ
الْمُؤْمِنُوْنَ، كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ

البقرة : ٢٨٦

जो कुछ भी इस रसूल पर उस के रब्ब की ओर से उतारा गया है उस पर वह स्वयं भी और दूसरे मोमिन भी ईमान रखते हैं। ये सब के सब अल्लाह और उस के फ़रिश्तों एवं उस की किताबों तथा उस के रसूलों पर ईमान रखते हैं। (अल्-बक़रः ९८, १७७, १७८, २८६)

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّ مِنَ
النَّاسِ، اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ○

الحج : ٧٦

अल्लाह फ़रिश्तों में से अपने रसूल चुनता है तथा मनुष्यों में से भी। अल्लाह बहुत (प्रार्थनाएँ) सुनने वाला एवं (परिस्थितियों को) बहुत देखने वाला है। (अल्-हज्ज ७६)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ
الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ، وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ
وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيْدًا ○

النسآء : ١٣٧

हे ईमान वालो ! अल्लाह और उस के रसूल पर एवं इस किताब पर ईमान लाओ जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है तथा उस किताब पर भी जो इस से पहले उस ने उतारी है और जो व्यक्ति अल्लाह और उस के फ़रिश्तों तथा उस की किताबों एवं उस के रसूलों और पीछे आने वाले दिन का इन्कार करे तो (समझ लो कि) वह घोर पथ-भ्रष्टता में पड़ गया है। (अल्-निसा १३७)

पवित्र क़ुर्आन-मजीद

"क़ुर्आन-मजीद" उस किताब का नाम है जो अल्लाह की ओर से हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर उतारी गई थी और जो मानव जाति के लिए अन्तिम धार्मिक विधान है। क़ुर्आन का अर्थ है—पढ़ी जाने वाली किताब। वास्तव में क़ुर्आन वह किताब है जो संसार में सबसे अधिक पढ़ी जाती है। "क़ुर्आन" शब्द से अभिप्राय किताब अथवा सन्देश भी है जिसे मानव जाति तक पहुँचाना उस के अर्थों में शामिल है। पवित्र क़ुर्आन ही एक ऐसी आकाशीय किताब है जिसकी शिक्षा और सन्देश सभी मानव जाति के लिए एक समान है तथा इस की शिक्षा पर अग्रसर होने एवं इस सन्देश की प्राप्ती में किसी प्रकार का कोई बन्धन नहीं जब कि अन्य धार्मिक पुस्तकें विशेष समय तथा विशेष जाति के लिए थीं जौर क़ुर्आन-मजीद पूरे समय के लिए तथा समस्त मानव जाति के लिए है। (३४ : २९)

الٓمّٓ ۝

अलिफ़, लाम, मीम। मैं अल्लाह सब से ज़्यादा जानने वाला हूँ।

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝

यही कामिल किताब है। इस में कोई सन्देह नहीं। यह संयमियों को हिदायत देने वाली है। (अल्-बक़रः २–३)

البقرة : ٢-٣

إِنَّهُ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝

निस्सन्देह यह क़ुर्आन बड़ा महिमाशाली है।

और एक छिपी हुई किताब में मौजूद है। (अल्-वाक़िअः ७८–७९)

الواقعة : ٧٨-٧٩

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝

जिन में क़ायम रहने वाला आदेश हो। (अल्-बय्यिनः ४)

البيّنة : ٤

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝

अल्लाह वह है जिस ने उत्तम से उत्तम बात अर्थात् ऐसी किताब उतारी है जो मिलती-जुलती भी है तथा उस के विषय भी अति उत्तम[2] हैं। जो लोग अपने रब्ब से डरते हैं उन के शरीर के रौंगटे उस के पढ़ने से खड़े हो जाते हैं, फिर उन की त्वचाएँ एवं दिल विनम्र हो कर अल्लाह की याद में झुक जाते हैं। यह (क़ुर्आन) अल्लाह की हिदायत है जिस के द्वारा वह जिसे चाहता है सत्यपथ दर्शाता है और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे उसे कोई भी हिदायत नहीं दे सकता। (अल्-ज़ुमर २४)

الزمر : ٢٤

حٰمٓ ۝

हमीद, मजीद (स्तुति वाले एवं महिमाशाली अल्लाह की ओर से यह सूरः उतरी है)।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ
اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۚ
وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۚ
الزخرف : ٢-٥

हम इस किताब की शपथ लेते हैं जो अपने विषयों को खोल-खोल कर बताने वाली हैं।

हम ने इस किताब को क़ुर्आन बनाया है, जो अरबी में है ताकि तुम समझो।

और यह (क़ुर्आन) उम्मुल्किताब में है तथा हमारे निकट बड़ा महिमाशाली एवं बड़ी हिक्मतवाला है। (अल्-ज़ुख़रुफ़|२-५)

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَ
اَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ
ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۙ
لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ وَ
الْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۝
الاحزاب : ٧٣-٧٤

हम ने कामिल अमानत (शरीअत) को आसमानों तथा ज़मीन और पर्वतों के सामने रखा था, किन्तु उन्होंने उस के उठाने से इन्कार कर दिया और उस से डर गए, परन्तु मनुष्य ने उसे उठा लिया। निश्चय ही वह अपनी जान पर बहुत अत्याचार करने वाला एवं परिणाम से बे-परवाह था।

(शरीअत का बोझ लाद देने का) फल यह हुआ कि मुनाफ़िक़ पुरुषों और मुनाफ़िक़ स्त्रियों को तो अल्लाह ने अज़ाब दिया तथा मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों पर कृपा की और अल्लाह है ही बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला (अल्-अहज़ाब ७३—७४)

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ
يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ
وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ۝

तू उन्हें कह दे कि यदि मनुष्य तथा जिन्न इस क़ुर्आन जैसी कोई दूसरी किताब लाने के लिए इकट्ठा हो जाएँ, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक ही बन जाएँ तो भी वे इस जैसी किताब नहीं ला सकेंगे।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ○

بنی اسرآءیل : ۸۹-۹۰

और निस्सन्देह हम ने इस क़ुर्आन में हर-एक ज़रूरी बात को विभिन्न रूप में वर्णन किया है, फिर भी बहुत से लोगों ने इन्कार की राह अपनाने के सिवा सब बातों का इन्कार कर दिया है। (बनी-इसाईल ८९-९०)

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ۭ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۣ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○

هود : ۱۸

अत: क्या वह व्यक्ति जो अपने रब्ब की ओर से एक रोशन दलील पर (क़ायम) है और जिस के पीछे भी उस (अल्लाह) की ओर से एक गवाह आएगा (जो उस का आज्ञाकारी होगा) और उस से पहले भी मूसा की किताब आ चुकी है (जो उस का समर्थन कर रही थी और) जो (इस ईश वाणी से पहले) लोगों के लिए इमाम तथा रहमत थी (क्या वह एक कपटी के समान हो सकता है?) वे (अर्थात् मूसा के सच्चे अनुयायी) उस पर (अवश्य ही एक दिन) ईमान ले आएँगे तथा इन विरोधी-गिरोहों में से जो कोई इन्कार करता रहेगा तो नरक उस का वादा किया हुआ ठिकाना है। अत: (हे सम्बोध्य !) तू इस के बारे में किसी शंका में न पड़। निस्सन्देह वह सत्य है और तेरे रब्ब की ओर से है, किन्तु बहुत से लोग ईमान नहीं लाते। (हूद १७)

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ

और यह (क़ुर्आन) एक बड़ी शान वाली किताब (धर्मग्रन्थ) है, जिसे हम ने उतारा है। वह बरकतों का भण्डार है और जो

مَنْ حَوْلَهَا ،

الانعام: ٩٣

ईशवाणी इस से पहले उतरी थी उसे पूरा करने वाला है और हम ने इसे इसलिए उतारा है कि तू इस के द्वारा लोगों को हिदायत दे और ताकि तू उम्मुल्क़ुरा (मक्का) वालों को तथा जो इस के इर्द-गिर्द रहते हैं उन्हें डराए। (अल्-अन्आम ९३)

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ،

المائدة: ٤

आज मैं ने तुम्हारे (हित के) लिए तुम्हारा धर्म मुकम्मल (सर्वांगपूर्ण) कर दिया है और तुम पर अपने उपकार को पूरा कर दिया है तथा तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द किया है, । (अल्-माइद: ४)

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝

الانعام: ١٥٦

और यह (क़ुर्आन) ऐसी किताब है जिसे हम ने उतारा है और यह बरकत वाली है। सो इस का अनुसरण करो तथा संयम धारण करो ताकि तुम पर दया की जाए।
(अल्-अन्आम १५६)

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝

بنی اسرآءيل: ٨٣

और हम क़ुर्आन में से धीरे-धीरे वह शिक्षा उतार रहे हैं जो मोमिनो के लिए तो स्वास्थ्य देने वाली और रहमत (का कारण) है, किन्तु अत्याचारियों को घाटे में ही बढ़ाती है। (बनी-इसाईल ८३)

पैग़म्बर-अवतार

क़ुर्आन-मजीद इस बात की पुष्टि करता है कि अल्लाह ने प्रत्येक जाति के लिए हिदायत का सामान किया है और इस प्रकार क़ुर्आन-मजीद हर-एक पैग़म्बर की पवित्रता एवं सच्चाई की पुष्टि करता है। इतिहास से विदित होता है कि प्रत्येक जाति की ओर हर समय में पैग़म्बरों को भेजवाया गया ताकि वे अल्लाह की ओर लोगों के ध्यान को आकृष्ट करें। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम धार्मिक विधान लाने वाले पैग़म्बरों में आख़िरी पैग़म्बर थे और इस प्रकार इस्लाम एक पूर्ण एवं मुकम्मल सन्देश है और समस्त प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों का पुञ्ज है। अब पैग़म्बर तो आ सकेंगे परन्तु केवल इस्लाम में और ये पैग़म्बर केवल इसलिए आएँगे कि वे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की लाई हुई शिक्षाओं को संसार में फैलाएं और कोई पैग़म्बर अब कोई नया धार्मिक विधान नहीं लाएगा। क़ुर्आन-मजीद केवल पैग़म्बरों के उज्जवल दशाओं पर ही प्रकाश नहीं डालता अपितु उनकी अवहेलना एवं शत्रुता की उन सभी अवस्थाओं पर प्रकाश डालता है जो उन के साथ घटित हुईं।

क़ुर्आन-मजीद के अनुसार फ़िरऔन उन शक्तियों का लक्षण एवं निशानी है जिन्हों ने सभी पैग़म्बरों की अवहेलना एवं विरोध किया।

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝

الحج : ٧٦

अल्लाह फ़रिश्तों में से अपने रसूल चुनता है तथा मनुष्यों में से भी। अल्लाह बहुत (प्रार्थनाएँ) सुनने वाला एवं (परिस्थितियों को) बहुत देखने वाला है। (अल्-हज्ज ७६)

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى
اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ۚ
فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝

النحل : ٣٧

निस्सन्देह हम ने हर-एक जाति में कोई न कोई रसूल (यह आदेश दे कर) भेजा है कि (हे लोगो !) तुम अल्लाह की उपासना करो और सीमा का उल्लंघन करने वाले हर एक व्यक्ति से दूर रहो, इस पर उन में से कुछ लोग तो ऐसे (अच्छे सिद्ध) हुए कि अल्लाह ने उन्हें हिदायत दी तथा कुछ ऐसे कि उन का सर्वनाश अवश्य हो गया। सो तुम देश भर में फिरो और देखो कि नबियों को झुठलाने वालों का परिणाम कैसा हुआ था ?। (अल्-नहल ३७)

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ فِي
الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ۭ قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ
يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاۗءَ ۚ وَنَحْنُ
نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۭ قَالَ اِنِّيْٓ
اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

البقرة : ٣١

और (हे मानव ! तू उस समय को भी याद कर) जब तेरे रब्ब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती पर एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ। इस पर उन्होंने कहा कि क्या तू उस में (ऐसे लोग भी) पैदा करेगा जो उसमें उपद्रव फैलाएँगे तथा रक्त-पात करेंगे, परन्तु हम (तो वे हैं जो) तेरी स्तुति के साथ-साथ तेरी पवित्रता का गुणगान करते हैं और तुझ में सब बड़ाइयों के पाए जाने का इक़रार करते हैं। इस पर अल्लाह ने कहा, निस्सन्देह मैं वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (अल्-बक़र: ३१)

إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ نُوحٍ وَّ
النَّبِيّٖنَ مِنۢ بَعْدِهٖ ۚ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ إِبْرٰهِيمَ وَ
إِسْمٰعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَ
عِيسٰى وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهٰرُونَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ
وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُورًا ۝
وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ
وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ
اللّٰهُ مُوسٰى تَكْلِيمًا ۝

النساء : ١٦٤-١٦٥

जिस प्रकार हम ने नूह पर और उस के बाद दूसरे सभी नबियों पर वह्य उतारी थी। निस्सन्देह हम ने तुम पर भी वह्य उतारी है तथा हम ने इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक़ और याक़ूब एवं (उस की) सन्तान पर और ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून तथा सुलेमान पर भी वह्य उतारी थी और हम ने दाऊद को भी एक किताब दी थी।

और कुछ ऐसे रसूल हैं जिन का समाचार हम (इस से) पहले तुझे दे चुके हैं तथा कुछ ऐसे रसूल हैं जिन की चर्चा हम ने तुझ से नहीं की और अल्लाह ने मूसा से बड़े अच्छे ढंग से बात-चीत की थी।
(अल्-निसा १६४–१६५)

وَإِذِ ابْتَلٰٓى إِبْرٰهِيمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ
فَأَتَمَّهُنَّ ۖ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ
إِمَامًا ۖ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۖ قَالَ لَا يَنَالُ
عَهْدِي الظّٰلِمِينَ ۝

البقرة : ١٢٥

और (उस समय को भी याद करो) जब कि इब्राहीम के रब्ब ने उसकी कुछ बातों द्वारा परीक्षा ली और उस ने उन्हें पूरा कर दिया। (इस पर अल्लाह ने) कहा, निस्सन्देह मैं तुझे लोगों का इमाम नियुक्त करने वाला हूँ। (इब्राहीम ने) कहा, और मेरी सन्तान में से भी (इमाम बनाइयो)। अल्लाह ने कहा, (ठीक है परन्तु) मेरे बचन से अत्याचारियों को कोई लाभ नहीं पहुँचेगा।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْ
بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۖ وَاٰتَيْنَا عِيسَى ابْنَ

और निस्सन्देह हम ने मूसा को किताब दी थी। इसके बाद हमने उन रसूलों को (जिनको तुम जानते हो) उसके पीछे भेजा और हम ने मर्यम के पुत्र ईसा को भी खुले-खुले निशान और चमत्कार दिए तथा

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ○

البقرة : ٨٨

रुहुलक़ुदुस द्वारा उसे शक्ति दी (किन्तु तुम ने सब का विरोध किया)। फिर तुम ही बताओ कि क्या यह बात बहुत बुरी नहीं कि जब भी तुम्हारे पास कोई रसूल ऐसी शिक्षा ले कर आया जिसे तुम्हारे दिल पसन्द नहीं करते थे, तब तुम ने अभिमान (का प्रदर्शन) किया। फलस्वरूप कुछ रसूलों को तो तुम ने झुठलाया तथा कुछ रसूलों की हत्या की।
(अल्-बक़र:१२५,८८)

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ○ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ○ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ○

يونس : ٩١-٩٢

और हम ने बनी-इस्राईल को समुद्र से पार किया तो फ़िरऔन और उस की सेना ने अभिमान और ज़्यादती करते हुए उन का पीछा किया, यहाँ तक कि जब उसे (तथा उस की सेना को) डूबने की विपत्ति ने आ पकड़ा तो उस ने कहा कि जिस पर बनी-इस्राईल ईमान लाए हैं मैं भी उस पर ईमान लाता हूँ। उस के सिवा कोई भी उपास्य नहीं और मैं आज्ञा पालन करने वालों में से (होता) हूँ।

(हम ने कहा कि) क्या तू अब ईमान लाता है, हालाँकि तू ने पहले अवज्ञा की और दंगा-फ़साद करने वालों में से था।९२।

अत: अब हम तेरे शरीर को सुरक्षित कर के तुझे (एक प्रकार की) मुक्ति देंगे, ताकि जो लोग तेरे बाद आने वाले हैं उन के लिए तू एक निशान हो और निस्सन्देह बहुत से लोग हमारे निशानों से ग़ाफ़िल हैं।
(यूनुस ९१–९३)

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ
اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝
فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۖ فَاَرْسَلْنَآ
اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝
قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ
تَقِيًّا ۝
قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ
غُلٰمًا زَكِيًّا ۝
قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ
وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝
قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَ
لِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا
مَّقْضِيًّا ۝

और तू इस किताब में मर्यम के सम्बन्ध में जो उल्लेख है उसे वर्णन कर (विशेषतः यह बात कि) जब वह अपने परिजनों से (अलग हो कर) पूर्व दिशा की ओर एक स्थान पर चली गई।

और अपने तथा उन (परिजनों) के बीच पर्दा डाल दिया (अर्थात् उन से सम्बन्ध तोड़ कर अपने-आप को छिपा लिया)। उस समय हम ने ईशवाणी लाने वाला अपना फ़रिश्ता (जिब्राईल) भेजा और वह उस के सामने एक स्वस्थ मानव के रूप में प्रकट हुआ।

(मर्यम ने उसे) कहा कि यदि तेरे अन्दर कुछ भी संयम है तो मैं तुझ से रहमान ख़ुदा की शरण माँगती हूँ।

(इस पर उस फ़रिश्ते ने) कहा कि मैं तो तेरे रब्ब का भेजा हुआ एक सन्देश लाने वाला हूँ ताकि मैं तुझे (वह्य के अनुसार) एक पवित्र बालक (का समाचार) दूँ (जो जवानी की आयु को पहुँचेगा)।

मर्यम ने कहा कि मेरे यहाँ लड़का कहाँ से होगा, क्योंकि अब तक किसी पुरुष ने मुझे नहीं छुआ और मैं कभी व्यभिचार और बुरे कामों में नहीं पड़ी।

(फ़रिश्ते ने) कहा कि बात तो इसी तरह है (जैसे तू ने कही है, परन्तु) तेरे रब्ब ने यह कहा है कि यह बात मेरे लिए आसान है तथा

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝
فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ
يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَ كُنْتُ نَسْيًا
مَّنْسِيًّا ۝
فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ
رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝
وَ هُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ
رُطَبًا جَنِيًّا ۝
فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ

(हम यह बालक इसलिए पैदा करेंगे) कि हम उसे लोगों के लिए एक निशान बनाएँ और अपनी ओर से रहमत (का साधन भी बनाएँ) और इस बात का हमारी ओर से फ़ैसला हो चुका है।

इस पर मर्यम ने उस (लड़के) को (अपने पेट में) उठा लिया और फिर उसे ले कर एक दूर के स्थान की ओर चली गई।

सो (जब वह वहाँ पहुँची तो) उसे बच्चा जनने की पीड़ा (उठी और उसे) विवश करके एक खजूर के तने की ओर ले गई। (जब मर्यम को विश्वास हो गया कि उसे बच्चा होने वाला है तो उस ने यह विचार कर के कि संसार वाले उस पर उँगली उठाएँगे) कहा, हाय! मैं इस से पहले मर जाती और मेरी याद मिटा दी जाती।

अतः फ़रिश्ते ने उसे निचली ओर से पुकार कर कहा कि (हे महिला!) चिन्ता न कर! अल्लाह ने तेरी निचली ओर एक स्रोत बहा रखा है (उस के पास जा और अपने-आप को तथा बच्चे को साफ़ कर)।

और वह खजूर (जो तेरे निकट होगी उस) की टहनी को पकड़ कर अपनी ओर हिला, वह तुझ पर ताज़ा फल गिराएगी।

अतः उन्हें खाओ और (स्रोत से पानी भी) पीयो तथा (स्वयं नहा कर और बालक को

مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ
لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۝
فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ
لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ۝
يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا
كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۝
فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ
فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝
قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۣ اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ
نَبِيًّا ۝
وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ
بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝

भी नहला कर) अपनी आँखें ठंढी करो। फिर यदि (इस बीच में) तू किसी पुरुष को देखे तो कह दे कि मैं ने रहमान (अल्लाह) के लिए एक व्रत की मन्नत मान रखी है। अत: मैं आज किसी भी मनुष्य से बात नहीं करूँगी।

इस के बाद वह उसे ले कर अपनी जाति के लोगों के पास सवार करा कर लाई, जिन्हों ने कहा कि हे मर्यम! तू ने बहुत बुरा काम किया है।

हे हारून की बहन! तेरा पिता तो बुरा व्यक्ति नहीं था और तेरी माँ भी व्यभिचारिणी नहीं थी।

इस पर उस ने उस बच्चे की ओर संकेत किया। इस पर लोगों ने कहा कि हम इस से किस तरह बातें करें जो कल तक पालने में बैठने बाला बच्चा था।

(यह सुन कर मर्यम के पुत्र ने) कहा कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और उस ने मुझे किताब दी है और मुझे नबी बनाया है।

और मैं जहाँ कहीं भी हूँ उस ने मुझे बरकत वाला बनाया है और जब तक मैं जीवित हूँ मुझे नमाज़ और ज़कात का विशेष रूप से आदेश दिया है।

وَّبَرًّا بِوَالِدَتِيْ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ○
وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ
اُبْعَثُ حَيًّا ○
ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ
يَمْتَرُوْنَ ○

مریم : ۱۷-۳۵

और मुझे अपनी माता से अच्छा व्यवहार करने वाला बनाया है तथा मुझे अत्याचारी एवं दुर्भाग्यशाली नहीं बनाया।

और जिस दिन मेरा जन्म हुआ था उस दिन भी मुझ पर शान्ति उतरी थी और जब मैं मरूँगा तथा जब मुझे जीवित कर के उठाया जाएगा (उस समय भी मुझ पर शान्ति उतरेगी)।

(देखो !) यह (वास्तव में) मर्यम का पुत्र ईसा है और यह (उस की असली) सच्ची घटना है जिस में वे लोग मतभेद से काम ले रहे हैं। (मर्यम १७–३५)

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ
اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ
رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ
وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۚ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى
ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ۚ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ۚ قَالَ
فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ○

آل عمران : ۸۲

और (उस समय को भी याद करो) जब अल्लाह ने (अहले किताब से) सब नबियों वाला पक्का वादा लिया था कि जो किताब और हिक्मत मैं तुम्हें दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई ऐसा रसूल आए जो उस कलाम (ईशवाणी) को पूरा करने वाला हो जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर अवश्य ही ईमान लाना तथा उस की सहायता भी करना और कहा था कि क्या तुम इसे मानते हो और इस पर मेरी (ओर से डाली गई) ज़िम्मेदारी स्वीकार करते हो? (और) उन्हों ने कहा था हाँ! हम प्रतिज्ञा करते हैं। कहा, 'अब तुम गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में से एक गवाह हूँ'। (आले-इम्रान ८२)

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنكَ وَ
مِن نُّوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ
وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۝

الاحزاب : ٨

और (याद करो) जब कि हम ने नबियों से उन पर डाली गई एक विशेष बात की प्रतिज्ञा ली थी तथा तुझ से भी (प्रतिज्ञा ली थी) और नूह एवं इब्राहीम तथा मूसा और मर्यम के पुत्र ईसा से भी तथा हम ने उन सब से पक्का बचन' लिया था। (अल्-अहज़ाब ८)

इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम

इस्लाम के पैग़म्बर एवं प्रवर्तक मक्का में अगस्त ५७० ई० में पैदा हुए। आपका शुभ नाम मुहम्मद (सल्लअम) रखा गया जिसका अर्थ है—"जिसकी प्रशंसा की गई हो।" जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ३० वर्ष की आयु को पहुँचे तो अल्लाह के अगाध प्रेम में डूबते गए। मक्का के लोगों के असीमित दुराचार विशेषकर बुतों की पूजा के विरुद्ध विरोध करते हुए नियमित रूप से एक गुफ़ा में जाकर अल्लाह की ओर ध्यान करके उस की उपासना शुरू कर दी। यह गुफ़ा मक्का से दो या तीन मील की दूरी पर है फिर जब आप ४० वर्ष के हुए उसी गुफ़ा में प्रथम बार आप पर आकाशवाणी हुई जो क़ुर्आन-मजीद की सूरः ९६ में अंकित है। इस आकाश-वाणी में आपको आदेश दिया गया कि इस बात की घोषणा करें कि अल्लाह एक है जिस ने मानव को पैदा किया है और उसके स्वभाव में अपने प्रेम के बीज को बोया है और यह भविष्यवाणी की गई है कि संसार को प्रत्येक प्रकार की शिक्षा कलम द्वारा दी जाएगी। यह पवित्र आयतें क़ुर्आन-मजीद की शिक्षाओं का निचोड़ हैं।

يَـٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ شَاهِدًا وَّ
مُبَشِّرًا وَّنَذِيرًا ۙ
وَّدَاعِيًا إِلَى اللّٰهِ بِإِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ۝
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِأَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
فَضْلًا كَبِيرًا ۝
الاحزاب : ٤٦-٤٨

हे नबी ! हम ने तुझे इस हालत में भेजा है कि तू (संसार वालों का) निरीक्षक[2] भी है और (मोमिनों को) शुभ-समाचार देने वाला भी है तथा (विरोधियों को) सावधान करने वाला भी है।

और अल्लाह की आज्ञा से उस की ओर बुलाने वाला तथा एक प्रकाशमान् सूर्य बना कर भेजा है।

और मोमिनों को शुभ-समाचार दे दे कि उन्हें अल्लाह की ओर से एक बहुत बड़ा पुरस्कार मिलेगा।(अल्-अहज़ाब|४६-४८)

قُلْ يَـٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ
جَمِيعًا ۨ الَّذِي لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ
لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِۦ وَيُمِيتُ ۖ فَـَٔامِنُوا بِاللّٰهِ وَ
رَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ
كَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝
الاعراف : ١٥٩

तू कह दे कि हे लोगो ! मैं तुम सब की ओर अल्लाह का रसूल (बन कर आया हूँ)। आसमानों तथा ज़मीन पर उसी को बादशाहत हासिल है। उस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह जीवित भी करता है तथा मारता भी है। अतः अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ जो नबी भी है और उम्मी भी। जो अल्लाह और उस की बातों पर ईमान रखता है। उस का अनुसरण करो ताकि तुम हिदायत पा सको।(अल्-आराफ़|१५९)

وَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ إِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَّ
نَذِيرًا وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝
سبا : ٢٩

और हम ने तुझे मानव-मात्र की ओर ऐसा रसूल बना कर भेजा है जो (मोमिनों को) शुभ-समाचार सुनाता है तथा (इन्कार करने वालों को) सावधान करता है, परन्तु लोगों में से बहुत से लोग इस सत्य को नही जानते।(सबा २९)

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ۝
وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝

القلم : ٤-٥

और तुझे अल्लाह की ओर से एक ऐसा बदला मिलेगा जो कभी समाप्त न होगा।

और तू (अपनी शिक्षा और कर्म में) बहुत ऊँचे शिष्टाचार पर क़ायम है।
(अल्-क़लम ४-५)

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

الاحزاب : ٤١

मुहम्मद तुम में से किसी पुरुष के न पिता थे न हैं (न होंगे) किन्तु वह अल्लाह के रसूल हैं, बल्कि (इस से भी बढ़ कर) नबियों की मुहर हैं तथा अल्लाह प्रत्येक बात को ख़ूब जानता है।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۝

الاحزاب : ٢١

तुम्हारे लिए (अर्थात् ऐसे लोगों के लिए) जो अल्लाह और क़ियामत के दिन से मिलने की आशा रखते हैं और अल्लाह को बहुत याद करते हैं, अल्लाह के रसूल में बहुत अच्छा नमूना (आदर्श) है (जिस का उन्हें अनुसरण करना चाहिए)।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

الاحزاب : ٥٦

निस्सन्देह अल्लाह इस नबी पर अपनी कृपा कर रहा है और उस के फ़रिश्ते भी (उसे आशीर्वाद दे रहे हैं अतः) हे मोमिनो! तुम भी इस रसूल पर दरूद भेजते रहो और उन के लिए प्रार्थना करते रहा करो और (पूरे जोश के साथ) उन के लिए शान्ति माँगते रहा करो। (अल्-अहज़ाब ४१, २२, ५७)

مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۖ

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उन के साथ हैं वे इन्कार करने वालों के विरुद्ध बड़ा जोश रखते हैं, परन्तु वे आपस में

سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنجِيلِ ۚ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

الفتح : ٣٠

एक-दूसरे से अत्यन्त मृदुलता का व्यवहार करने वाले हैं। तू जब उन्हें देखेगा तो तू उन्हें शिर्क से मुक्त और अल्लाह का आज्ञाकारी पाएगा। वे अल्लाह की कृपा तथा उस की प्रसन्नता पाने की खोज में लगे रहते हैं। उन की पहचान उन के चेहरों पर सजदों के निशानों के रूप में है। उन की यह दशा तौरात में वर्णित है और इञ्जील में उन की दशा इस प्रकार वर्णन की गई है कि वे खेती[1] के समान होंगे जिस ने पहले तो अपना अंकुर निकाला, तत्पश्चात् उसे (प्राकृतिक और भौतिक खाद्य-पदार्थों के आधार पर) सुदृढ़ बनाया तथा वह अंकुर और सुदृढ़ हो गया। फिर अपनी जड़ पर दृढ़ता से क़ायम हो गया यहाँ तक कि वह किसान को पसन्द आने लग गई। इस का परिणाम यह निकलेगा कि इन्कार करने वाले उन्हें देख-देख कर जलेंगे। अल्लाह ने मोमिनों और ईमान के अनुकूल कर्म करने वालों से यह प्रतिज्ञा की है कि उन्हें क्षमा (करेगा) और बहुत बड़ा प्रतिफल प्राप्त होगा। (अल्-फ़तह २०)

قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا

तू कह दे, '(हे लोगो !) यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो' (ऐसी अवस्था में) वह भी तुम से प्रेम करेगा और तुम्हारे अपराध क्षमा कर देगा तथा अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।

तू कह दे कि तुम अल्लाह और इस के रसूल के आज्ञाकारी बनो। इस पर यदि वे मुँह

فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ○

آل عمران : ٣٢-٣٣

फेर लें तो (याद रखो कि) अल्लाह इन्कार करने वालों से कदापि प्रेम नहीं करता ।३३। (आले-इम्रान ३२–३३)

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۭ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ۭ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ○

المائدة : ٦٨

हे रसूल ! तेरे रब्ब की ओर से जो कलाम तुझ पर उतारा गया है उसे लोगों तक पहुँचा दे और यदि तू ने ऐसा न किया तो (मानो) तू ने उस का संदेश बिल्कुल पहुँचाया ही नहीं और अल्लाह तुझे लोगों (के आक्रमणों) से सुरक्षित रखेगा। निस्सन्देह अल्लाह इन्कार करने वालों को कदापि (सफलता का) मार्ग नहीं दिखाएगा ॥ (अल्-माइदः ६८)

उपासना

इस्लाम के पाँच स्तम्भों में से नमाज़ दूसरा स्तम्भ है। पहला स्तम्भ अल्लाह की एकता पर विश्वास रखना है। नमाज़ अल्लाह के साथ सम्बन्ध स्थापित करने तथा उसकी निकटता प्राप्त करने का एक प्रभावशाली साधन है। यह निरन्तर चलने वाला एक कर्म है। अल्लाह सुनता है और प्रार्थना का उत्तर देता है। इस्लाम की उपासना के सम्बन्ध में विचार यह है कि उपासक की आत्मा अल्लाह के समक्ष उसकी कृपा एवं दया तथा शक्ति पर अटल विश्वास करते हुए न रुकने वाले जोश के साथ सजदः में गिरी हुई है। उपासना में मानव और उस के पैदा करने वाले के बीच किसी अन्य सहारे की आवश्यकता नहीं।

وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَ يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝

البيّنة : ٦

हालाँकि उन्हें यही आदेश दिया गया था कि वे केवल एक ही अल्लाह् की उपासना करें और उपासना को केवल उसी के लिए विशिष्ट कर दें (इस हालत में कि) वे अपनी नेक भावनाओं में दृढ़ विश्वास रखने वाले हों और (फिर इस बात की भी आज्ञा दी गई थी कि) नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ा करें और ज़कात दें और यही (सदा सच्चाई पर) क़ायम रहने वाला धर्म है।
(अल्-बय्यिन:६)

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ۝

الذّٰريٰت : ٥٧

और मैं ने जिन्नों तथा मनुष्यों को अपनी उपासना के लिए पैदा किया है।
(अल्-ज़ारियात ५७)

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ۝
وَ مِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝

بنی اسرآءیل : ٧٩-٨٠

तू सूर्य ढलने (के समय) से ले कर रात के खूब अंधकार हो जाने तक (विभिन्न घड़ियों में) नमाज़ को अच्छी तरह पढ़ा कर और प्रातःकाल क़ुर्आन के पढ़ने को भी (ज़रूरी समझ)। प्रातःकाल (क़ुर्आन) का पढ़ना निश्चय ही (अल्लाह् के निकट एक) प्रिय कर्म है।

और रात के समय कुछ सो लेने के बाद इस (क़ुर्आन) के द्वारा जागा कर जो तुझ पर एक विशेष उपकार है। (इस तरह) पूर्ण आशा है कि तेरा रब्ब तुझे प्रशंसा वाले स्थान पर खड़ा कर दे। (बनी-इसाईल ७९-८०)

حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَ قُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ۝

البقرة : ٢٣٩

तुम सारी नमाज़ों का और (ख़ासकर) दरमियानी (मध्यम में आने वाली) नमाज़ का पूरा ध्यान[1] रखो तथा अल्लाह के लिए आज्ञाकारी बन कर खड़े हो जाओ।
(अल्-बक़र: २३९)

रोज़ा-व्रत

क़ुर्आन-मजीद में बताया है कि रमज़ान शरीफ़ में जो चाँद का महीना है प्रातःकाल से सूर्यास्त तक रोज़ा रखा जाए। यह प्रशिक्षण का साधन है जो संयम में वृद्धि प्रदान करता है और आध्यात्मिकता की उच्च श्रेणी तक पहुँचना सरल कर देता है। रोज़ा रखते वाला अल्लाह के गुण अर्थात् दानशीलता, उदारता और दयालुता आदि से अवगत हो जाता है और इस प्रकार रोज़ा इन गुणों को अपनाने में प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करता है

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ۚ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ۚ وَ اَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

البقرة : ١٨٤-١٨٥

हे ईमान लाने वाले लोगो ! तुम्हारे लिए रोज़े रखने उसी प्रकार ज़रूरी ठहराए गए हैं जिस प्रकार उन लोगों के लिए ज़रूरी ठहराए गए थे जो तुम से पहले हो चुके हैं ताकि तुम (आध्यात्मिक और नैतिक त्रुटियों से) सुरक्षित रहो।

(अतएव तुम रोज़े रखो) ये गिनती के कुछ दिन हैं और तुम में से जो व्यक्ति रोगी हो अथवा मुसाफ़िर हो तो उसे दूसरे दिनों में गिनती पूरी करनी होगी तथा उन लोगों के लिए जो इस' (रोज़े) की शक्ति न रखते हों (आर्थिक शक्ति होने पर) एक निर्धन का भोजन देना ज़रूरी है एवं जो व्यक्ति पूर्ण रूप से आज्ञाकारी बन कर अच्छे कर्म करेगा तो यह उस के लिए अच्छा होगा और यदि तुम ज्ञान रखते हो तो (समझ सकते हो कि) तुम्हारा रोज़े रखना तुम्हारे लिए अच्छा है। (अल्-बक़र: १८४–१८५)

ईश्वर की राह में ख़र्च करना

मूल धन पर जो टैक्स क़ुर्आन ने निर्धारित किया है उसे ज़कात कहते हैं। "ज़कात" शब्द से ही इस का उद्देश्य प्रकट होता है। "ज़कात" का अर्थ है—पवित्र करना और वृद्धि प्रदान करना अर्थात् क़ौम के हिस्सा को निकाल कर शेष पवित्र सम्पत्ति को अपने प्रयोग में लाना और क़ौम के हिस्सा को क़ौम की सेवा में लगा कर उसकी उन्नति का कारण बनना। ज़कात इस्लाम का तीसरा स्तम्भ है और यह स्तम्भ इस्लाम में एक-दूसरे पर डाले गए दायित्व के महत्व पर प्रकाश डालता है।

وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ ارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ○

البقرة : ٤٤

और नमाज़ को क़ायम करो अर्थात् विधिवत पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और अल्लाह की उपासना करने वालों के साथ मिल कर अल्लाह की उपासना करो। (अल् बक़र: ४४)

فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ○

الروم : ٣٩

(हे क़ुर्आन पढ़ने वाले! जब अल्लाह तेरी रोज़ी बढ़ा दे तो) तुम्हें चाहिए कि नातेदारों, निर्धनों और यात्रियों को उन का हक़ दिया करो। यह बात उन लोगों के लिए बहुत अच्छी है जो अल्लाह की प्रसन्नता पाना चाहते हैं तथा वही लोग सफलता पाने वाले हैं। (अल्-रूम ३९)

وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ○

الذّٰريٰت : ٢٠

और उन के धन में माँगने वालों का भी हक़ था तथा उन का भी जो माँग नहीं सकते थे। (अल्-ज़ारियात २०)

وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۙ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۙ

المعارج : ٢٥-٢٦

और जिन के धन-दौलत में एक निश्चित भाग निर्धन माँगने वालों का भी होता है।

और उन का भी होता है जो माँग नहीं सकते। (अल्-मआरिज २५-२६)

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ

सदक़ात (दान) तो केवल निर्धनों और मुहताजों के लिए हैं और उन के लिए जो दान इकट्ठा करने के लिए नियुक्त किए गए हैं तथा उन के लिए जिन के दिलों को (अपने साथ) मिलाना अभीष्ट हो और इसी प्रकार

ابْنِ السَّبِيْلِ ۖ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ○

التوبة : ٦٠

क़ैदियों और ऋणियों के लिए तथा (उन के लिए जो) अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं और यात्रियों के लिए हैं। यह अल्लाह की ओर से नियुक्त किया हुआ फ़र्ज़ (कर्त्तव्य) है और अल्लाह बहुत जानने वाला एवं बड़ी हिक्मत वाला है। (अल्-तौबः ६०)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۗ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ○

البقرة : ٢٥٥

हे ईमान वालो ! जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उस में से (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो, उस दिन के आने से पहले कि जिस में न किसी प्रकार का व्यापार होगा न मित्रता और न सिफ़ारिश काम आएगी तथा (इस आदेश का) इन्कार करने वाले (स्वयं अपने आप पर) अत्याचार करने वाले हैं।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ○ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○

البقرة : ٢٦٢-٢٦٣

जो लोग अपना धन अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उन (के इस दान) की हालत उस दाने की हालत जैसी है जो सात बालियाँ उगाए तथा प्रत्येक बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिस के लिए चाहता है उसे (इस से भी) बढ़ा-चढ़ा कर देता है और अल्लाह देने वाला और बहुत जानने वाला है।

जो लोग अपने धन अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, फिर ख़र्च करने के बाद न तो किसी तरह का एहसान (उपकार) जताते हैं और न किसी प्रकार का दुःख ही देते हैं। उन के लिए उन के रब्ब के पास उन के (कर्मों) का बदला (सुरक्षित) है और उन्हें न तो किसी प्रकार का भय होगा और न वे चिन्तित होंगे।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَ تَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○

البقرة : ٢٦٦

और जो लोग अपने धन को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए तथा अपने-आप को मज़बूत करने के लिए ख़र्च करते हैं, उन के ख़र्च की हालत उस बाग़ की हालत जैसी है जो ऊँचे स्थान पर हो और उस पर तेज़ वर्षा हुई हो जिस के कारण वह अपना फल दोगुना लाया हो और (उस की यह हालत हो कि) यदि उस पर ज़ोर की वर्षा न भी हो तो थोड़ी सी वर्षा ही (उस के लिए काफ़ी हो जाए) और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○

البقرة : ٢٧٤

जो लोग रात और दिन अपना धन (अल्लाह) की राह में) छिप कर (भी) और खुले रूप में भी ख़र्च करते रहते हैं, उन के लिए उन के रब्ब के पास उन का प्रतिफल (सुरक्षित) है और न तो उन्हें कोई भय होगा और न वे चिन्तित होंगे।
(अल्-बक़र: २५४,२६२,२६३,२६६,२७४)

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَ مَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ وَ اللّٰهُ الْغَنِيُّ وَ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ○

محمد : ٣٩

सुनो! तुम वे लोग हो जिन्हें इसलिए बुलाया गया है कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो, किन्तु तुम में से कुछ ऐसे होते हैं जो कंजूसी से काम लेते हैं और जो भी कंजूसी से काम ले वह अपनी जान के बारे में ही कंजूसी से काम लेता है अन्यथा अल्लाह तो किसी चीज़ का मुहताज नहीं है, परन्तु तुम ही मुहताज हो और यदि तुम विमुख हो जाओ तो वह तुम्हारे स्थान पर एक और जाति बदल कर ले आएगा और वे लोग तुम्हारी तरह (आलसी) नहीं होंगे। (मुहम्मद ३९)

हज्ज-तीर्थ यात्रा तथा काबा-ईश्वर का घर

क़ुर्आन-मजीद सभी मुसलमानों को आदेश देता है कि वह अपने जीवन में एक बार मक्का जाकर हज्ज करें इस शर्त के साथ कि आने-जाने के ख़र्च का प्रबन्ध कर सकें एवं वहाँ की यात्रा प्रत्येक दृष्टिकोण से सुरक्षित भी हो। हज्ज का केन्द्रीय स्थान काबा है जो अल्लाह का घर है और मक्का में स्थित है। क़ुर्आन-मजीद के कथनानुसार यह वह पहला घर है जो अल्लाह की उपासना के लिए बनाया गया। हज्ज का उद्देश्य मुसलमानों में विश्वव्यापी भाई-चारा की चेतना को जागृत करना है और कुछ धार्मिक कर्त्तव्य का पालन करके हज्ज करने वालों के दिलों में यह बात बैठाना एक मात्र लक्ष्य है कि उन के जीवन का प्रमुख केन्द्रीय दृष्टिकोण अल्लाह की सत्ता है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ
اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ
لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَن
يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ
عَذَابٍ أَلِيمٍ ○
وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ
أَن لَّا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ
لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ
السُّجُودِ ○
وَأَذِّن فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ
كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ
عَمِيقٍ ○
لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ
اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن
بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا

(किन्तु) वे लोग जो इन्कार करने वाले हैं और अल्लाह की राह से एवं अल्लाह के घर (काबा) की ओर जाने से रोकते[1] हैं, जिसे हम ने मानव-मात्र के भले के लिए बनाया है, उन के लिए भी जो उस में बैठ कर अल्लाह की उपासना करते हैं और उन के लिए भी जो जंगलों (गाँवों) में निवास करते हैं तथा जो व्यक्ति इस में अत्याचार द्वारा बिगाड़ पैदा करना चाहेगा तो हम उसे पीड़ा-दायक अज़ाब देंगे।

और (याद कर) जब हम ने इब्राहीम को बैतुल्लाह (काबा) के स्थान पर निवास करने का अवसर प्रदान किया (एवं कहा) कि किसी को हमारा साझी न बनाओ तथा मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों के लिए और खड़े हो कर उपासना करने वालों के लिए तथा रुकू करने वालों के लिए एवं सजदः करने वालों के लिए पवित्र कर।

और सब लोगों में घोषणा कर दे कि वे हज्ज के इरादे से तेरे पास आया करें, पैदल भी और ऐसी सवारी पर भी जो लम्बी यात्रा के कारण दुबली हो गई हों (ऐसी सवारियाँ) दूर-दूर से गहरे रास्तों से होती हुई आएँगी।

ताकि वे (आने वाले) उन लाभों को देख लें जो उन के लिए (निश्चित किए गए) हैं और कुछ निश्चित दिनों में उन निअमतों के कारण अल्लाह को याद करें, जो उस ने

الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ۝
ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ
وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝
الحج : ٢٦-٣٠

उन्हें दी हैं। (अर्थात्) बड़े जानवरों की क़िस्म से (जैसे ऊँट, गाय आदि)। अतः चाहिए कि वे उन का माँस प्रयोग में लाएँ तथा कष्ट में पड़े हुए लोगों और निर्धनों को खिलाएँ।

फिर अपनी मैल-कुचैल दूर करें तथा अपनी मनौतियाँ पूरी करें और पुराने घर (काबा) का तवाफ़ (परिक्रमा) करें। (अल्-हज्ज २६-३०)

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ
دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ۗ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ
الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۗ وَمَنْ
كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝
اٰل عمران : ٩٨

उस में अनेक खुले-खुले निशान हैं। वह इब्राहीम के खड़े होने का स्थान है तथा जो व्यक्ति उस में प्रवेश करे वह सुरक्षित हो जाता है और अल्लाह ने लोगों का यह कर्त्तव्य ठहराया है कि जो उस तक पहुँचने का सामर्थ्य रखे वे इस घर का हज्ज करें और जो कोई इन्कार करे तो (वह याद रखे कि) अल्लाह सब जहानों (समस्त लोगों) से बे-परवाह है। (आले-इम्रान ९८)

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ
الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي
الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ
اللّٰهُ ۗ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ
التَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۝
البقرة : ١٩٧

हज्ज (के महीने सब के) जाने-माने हुए महीने हैं। अतः जो व्यक्ति उन में हज्ज करने का दृढ़ निश्चय कर ले (उसे याद रहे कि) हज्ज (के दिनों) में न तो काम वासना की बात, न कोई नाफ़रमानी और न किसी प्रकार का झगड़ा करना उचित होगा और तुम भलाई का जो भी काम करोगे अल्लाह उस के महत्व को जान लेगा तथा पाथेय (अर्थात् रास्ते का ख़र्च) साथ ले लिया करो और याद रखो कि उत्तम पाथेय संयम है तथा हे बुद्धिमानो! मेरे लिए संयम धारण करो। (अल्-बक़र: १९७)

समस्त मानव जाति को पवित्र सन्देश पहुँचाना

अल्लाह के सन्देश को पहुँचाते समय हर उस बात को ध्यान में रखना चाहिए जो सम्बोधित व्यक्ति पर प्रभाव डाल सके। यह बात याद रखनी चाहिए कि सन्देश को पहुँचाने का एक मात्र लक्ष्य यह है कि सम्बोधित उस सन्देश को समझ सके और उस पर चल सके। यह नियम उन आदेशों में विद्यमान है जो मूसा और हारून को फ़िरऔन के सम्बन्ध में दिए गए थे कि वे किस प्रकार फ़िरऔन से सम्बन्ध स्थापित करें और किस प्रकार उस से सम्बोधित हों।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ إِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ إِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ○
وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَ بَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ○
وَمَا يُلَقّٰهَآ إِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰهَآ إِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ○
حٰمٓ السجدة : ٣٤-٣٦

और उस व्यक्ति से बढ़ कर किस की बात अच्छी होगी जो लोगों को अल्लाह की ओर बुलाता है तथा अपने ईमान के अनुकूल कर्म करता है और कहता है कि मैं तो आज्ञा पालन करने वालों में से हूँ।

और पुण्य एवं पाप बराबर नहीं हो सकते। तू बुराई का उत्तर बहुत अच्छे व्यवहार से दे। इस का परिणाम यह निकलेगा कि वह व्यक्ति कि उस के और तेरे बीच शत्रुता पाई जाती है तेरे अच्छे व्यवहार को देख कर तेरा हार्दिक मित्र बन जाएगा।

और (अत्याचार सहन करने पर भी) इस (प्रकार के व्यवहार करने) का सामर्थ्य केवल उन्हीं लोगों को मिलता है जो बड़े धैर्यवान हैं या फिर उन्हें जिन्हें (अल्लाह की ओर से परोपकार करने का) एक बहुत बड़ा हिस्सा मिला है। (हा-मीम अल्-सजदः ३४—३६)

اُدْعُ إِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ○
وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ

(हे रसूल!) तू लोगों को हिक्मत तथा सदुपदेश द्वारा अपने रब्ब की राह की ओर बुला। उन से उन के मतभेदों के विषय में अच्छे ढंग से वाद-विवाद कर। तेरा रब्ब उन लोगों को (भी सब से) बढ़ कर जानता है जो उस की राह से भटक गए हैं तथा उन्हें भी जो हिदायत पाते हैं।

यदि तुम (अत्याचारियों को) दण्ड दो तो जितना अत्याचार तुम पर किया गया हो

بِهٖ ۚ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ○
وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ
عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ○
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ
مُّحْسِنُوْنَ ○

النحل : ١٢٦-١٢٩

उतना ही तुम दण्ड दो और यदि तुम धैर्य धारण करोगे तो वह धैर्यवानों के लिए अच्छा होगा।

और (हे रसूल !) तू धैर्य से काम ले तथा तेरा धैर्य धारण करना अल्लाह की सहायता से ही हो सकता है एवं तू उन (लोगों की दशा) पर दुःखी न हो और जो बुरे उपाय वे करते हैं उन के कारण भी तू दुःख न कर।

(और याद रख कि) निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों के साथ होता है जिन्हों ने संयम धारण किया हो तथा जो सदाचारी हों।
(अल-नहल १२६–१२९)

وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ
فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ
مَاْمَنَهٗ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ○

التوبة : ٦

और यदि मुश्रिकों में से कोई व्यक्ति तुझ से शरण माँगे तो तू उसे शरण दे, यहाँ तक कि वह अल्लाह की बातें सुन ले। तदुपरांत उसे उस के सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दे, क्योंकि वे ऐसी जाति के लोग हैं जिन्हें (वास्तविकता का) ज्ञान नहीं।
(अल्-तौबः ६)

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا
وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝
الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ۚ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ
اُولُوا الْاَلْبَابِ ○

और मुझे आदेश मिला है कि मैं सब से बढ़ कर आज्ञाकारी बनूँ।

जो हमारी बात को सुनते हैं और फिर उस में से सर्वोत्तम आदेश का अनुसरण करते हैं, वही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और वही लोग समझ वाले हैं।

नैतिकता और शिष्टाचार

क़ुर्आन-मजीद जीवन को अपनाने की शिक्षा देता है। जीवन के समाप्त करने एवं उसे वापस लेने की शिक्षा नहीं देता। इस्लाम संसार को त्यागने और सन्यास लेने की शिक्षा नहीं देता। पवित्र जीवन व्यतीत करना और उन शक्तियों का उचित ढंग से प्रयोग करना जो अल्लाह ने प्रदान की है जीवन का विधि-विधान है। इस साधारणतया विचार के अनुकूल क़ुर्आन-मजीद नैतिक एवं आध्यात्मिक बातों की वृद्धि के लिए सविस्तार आदेश देता है और इसका प्रयोजन यह है कि समस्त योग्यताओं तथा शक्तियों की उन्नति समान रूप से हो और दूसरे इस से लाभान्वित हो सकें।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ
أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ○
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ
عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن
نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ وَلَا
تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ
بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَن
لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ○
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ
الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا
يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن
يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا
اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ○

الحجرات : ١١-١٣

मोमिनों का नाता आपस में केवल भाई-भाई का सा है। अतः तुम अपने दो भाइयों के बीच जो आपस में लड़ते हों, सन्धि करा दिया करो और अल्लाह के लिए संयम धारण करो ताकि तुम पर दया की जाए।

हे मोमिनो! कोई जाति किसी दूसरी जाति को तुच्छ समझ कर उस से हँसी-ठट्ठा न किया करे। सम्भव है कि वह जाति उस से अच्छी हो और न (किसी जाति की) स्त्रियाँ दूसरी (जाति की) स्त्रियों को हीन समझ कर उन से हँसी ठट्ठा किया करे। हो सकता है कि वे (दूसरी स्त्रियाँ) उन से अच्छी हों और न तुम आपस में एक-दूसरे को ताने (व्यंग) दिया करो और न एक-दूसरे को बुरे नामों से पुकारा करो, क्योंकि ईमान लाने के पश्चात् अवज्ञा करना एक अत्यन्त घृणित नाम (अर्थात् फ़ासिक़) का पात्र बना देता है और जो व्यक्ति तौबः न करे वह अत्याचारी होगा।

हे ईमान वालो! बहुत से गुमानों से बचते रहा करो, क्योंकि कुछ गुमान पाप बन जाते हैं और टोह में काम न लिया करो और तुम में से कोई भी दूसरे की चुगली न किया करे। क्या तुम में से कोई व्यक्ति अपने मुर्दा भाई का माँस खाना पसन्द करेगा? (यदि यह बात तुम से सम्बन्धित की जाए तो) तुम इसे पसंद नहीं करोगे और अल्लाह के लिए संयम धारण करो। अल्लाह तौबः स्वीकार करने वाला और बार-बार दया करने वाला है। (अल्-हुजुरात ११–१३)

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّ
بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ
وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا
فَخُوْرَا ۙ
الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ
وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ وَاَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝
وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَاۗءَ النَّاسِ وَلَا
يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ وَمَنْ يَّكُنِ
الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَاۗءَ قَرِيْنًا ۝
النّسآء : ۳۷-۳۹

और तुम अल्लाह की उपासना करो तथा किसी को भी उस का साझी न बनाओ और माता-पिता तथा निकट-सम्बन्धियों, अनाथों, निर्धनों, सम्बन्धी पड़ोसियों, सम्बन्ध-रहित-पड़ोसियों, पास में रहने वाले लोगों, यात्रियों तथा जिन के तुम स्वामी बन चुके हो उन सब के साथ भी परोपकार करो और जो घमण्डी एवं इतराने वाले हों अल्लाह उन्हें कदापि पसंद नहीं करता।

जो स्वयं कन्जूसी करते हैं और दूसरे लोगों को भी कन्जूसी की प्रेरणा देते हैं तथा जो कुछ अल्लाह ने अपनी कृपा से उन्हें प्रदान किया है उसे छिपाते हैं और हम ने ऐसे इन्कार करने वालों के लिए अपमान-जनक अज़ाब तय्यार कर रखा है।

और जो लोग अपना धन लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं तथा वे न तो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न ही पीछे आने वाले दिन पर। (उन का परिणाम बुरा होगा) और जिस व्यक्ति का शैतान साथी हो (उसे याद रखना चाहिए कि) वह बहुत बुरा साथी है (अल्-निसा ३७-३९)

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَاۗئِ
ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ

निस्सन्देह अल्लाह न्याय करने का और परोपकार करने और (जो सम्बन्धी न हों उन को भी) नातेदारों की तरह (समझने और सहायता) देने का आदेश देता है और हर-एक प्रकार की निर्लज्जता तथा अरुचि-कर बातों एवं विद्रोह से रोकता है। वह

وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝
وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا
تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ
جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ۝
وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ
قُوَّةٍ أَنْكَاثًا ۚ تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا
بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ
إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝

النحل : ٩١-٩٣

तुम्हें उपदेश देता है ताकि तुम समझ जाओ।

और (चाहिए कि) तुम अल्लाह के साथ किए हुए अपने प्रण पूरे करो और क़समों को उन के पक्का करने के बाद तोड़ा न करो जब कि तुम ने अल्लाह को (उस की क़सम खा कर) अपना ज़ामिन भी ठहरा लिया हो। जो कुछ तुम करते हो निश्चय ही अल्लाह उसे जानता है।

और उस स्त्री की तरह मत बनो जिस ने अपने काते हुए सूत को उस के मज़बूत हो जाने के बाद काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया था। (इसी प्रकार) इस डर से कि कोई जाति किसी दूसरी जाति के मुक़ाबिले में अधिक शक्तिशाली न हो जाए तुम अपनी क़समों को छल-कपट द्वारा आपस में एक-दूसरे से प्रभाव बढ़ाने का साधन बना लो। अल्लाह तो केवल इन आदेशों के द्वारा तुम्हारी परीक्षा कर रहा है और क़ियामत के दिन तुम पर सारी वास्तविकता अवश्य खोल देगा। (अल्-नहल ९१–९३)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ
بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَوِ
الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ ۚ إِنْ يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ
فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ

हे ईमान वालो! तुम पूर्ण रूप से न्याय पर क़ायम रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बन जाओ, यद्यपि तुम्हारी गवाही तुम्हारे अपने या माता-पिता और परिजनों के विरुद्ध ही पड़ती हो। यदि वह (जिस के लिए गवाही दी जाए) धनवान

اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝
النسآء : ١٣٦

हैं या निर्धन है तो (प्रत्येक दशा में) अल्लाह उन दोनों से (तुम) सब से बढ़ कर भलाई करने वाला है। अतः तुम तुच्छ कामना का अनुसरण न किया करो ताकि तुम न्याय कर सको और यदि तुम (किसी गवाही को) छिपाओगे अथवा (सच्चाई प्रकट करने से) कतराओगे तो (याद रखो कि) जो कुछ तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उस से जानकारी रखता है।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝
اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ۝
النسآء : ١٤٩-١٥٠

अल्लाह बुरी बात के ज़ाहिर करने को पसन्द नहीं करता, किन्तु जिस पर अत्याचार किया गया हो (वह उस अत्याचार को ज़ाहिर कर सकता है) और अल्लाह बहुत ही सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।

यदि तुम किसी नेकी को ज़ाहिर करो अथवा उसे छिपाए रखो या किसी की बुराई को क्षमा कर दो तो (जान लो कि) निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बड़ा शक्तिशाली है। (अल्-निसा १३६,१४९,१५०)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ۭ اِعْدِلُوْا ۣ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

हे ईमान लाने वालो ! तुम न्यायपूर्वक गवाही देते हुए अल्लाह (की प्रसन्नता हासिल करने) के लिए खड़े हो जाओ और किसी जाति की शत्रुता तुम्हें कदापि इस बात के लिए तय्यार न कर दे कि तुम न्याय न करो। तुम न्याय से काम लो, यह बात संयम के अधिक निकट है तथा अल्लाह के लिए संयम धारण करो एवं जो कुछ तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उसे जानता है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ○
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ○

ـدة : ٩-١٠

जो लोग ईमान लाए हैं और उन्हों ने शुभ-कर्म किए हैं उन से अल्लाह ने प्रतिज्ञा की है कि उन के लिए बख़्शिश एवं बहुत बड़ा बदला निश्चित है।

और जिन लोगों ने इन्कार किया तथा हमारी आयतों को झुठलाया है वे लोग नरक में जाने वाले हैं। (अल्-माइद: ९–११)

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ○

और तुम निर्धनता के डर से अपनी संतान की हत्या मत करो। उन्हें हम ही आजीविका प्रदान करते हैं और तुम्हें भी। निस्सन्देह उन की हत्या करना बहुत बड़ा अपराध है।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ○

और व्यभिचार के निकट भी न जाओ। निस्सन्देह यह खुली-खुली निर्लज्जता और बहुत बुरी राह है।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ○

अल्लाह ने जिस जान की हत्या करना हराम ठहराया है उसे शरीअत के हक़ के सिवा क़त्ल न करो तथा जो व्यक्ति बिना किसी अपराध के अत्याचार से मारा जाए, हम ने उस के वारिसों को क़िसास[1] (बदला लेने) का अधिकार दिया है। सो (उस के लिए यह हिदायत है कि) वह (हत्यारे को) क़त्ल करने में (हमारी निश्चित की हुई) सीमा से आगे न बढ़े (यदि वह सीमा में रहेगा) तो निस्सन्देह हमारी सहायता उसे पहुँचती रहेगी।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ
اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ
اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا ۝
وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ
الْمُسْتَقِيْمِ ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝
وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۚ اِنَّ السَّمْعَ وَ
الْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ۝
وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ
الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝
كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ۝

बनी इसराईल : ३२-३९

और तुम उस रीति को छोड़ कर जो (अनाथ के पक्ष में) उत्तम हो किसी और ढंग से अनाथ के धन के पास मत फटको यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाए तथा अपना वादा पूरा करो, क्योंकि हर-एक वादा के बारे में (एक न एक दिन) अवश्य पूछा जाएगा।

और जब तुम किसी को माप कर देने लगो तो माप पूरा दिया करो और (जब तौल कर दो तो भी) सीधे तराजू से तौल कर दिया करो। यह बात सर्वश्रेष्ठ तथा परिणाम की दृष्टि से बहुत अच्छी है।

और (हे सम्बोधित !) जिस बात का तुझे ज्ञान न हो उस का पीछा न किया कर, क्योंकि कान, आँख और दिल, इन सब के बारे में पूछा जाएगा।

और धरती पर अकड़ कर मत चल क्योंकि इस प्रकार न तो तू देश की अन्तिम सीमा तक पहुँच सकता है तथा न ही तू जाति के सरदारों[1] का उच्च-पद पा सकता हैं।

इन (आदेशों) में से हर-एक (कर्म) का बुरा रूप तेरे रब्ब को पसंद नहीं है।३९।
(बनी-इसाईल ३२–३९)

इस्लाम की आर्थिक प्रणाली के मूल सिद्धान्त

इस्लाम में आर्थिक प्रणाली का मूल सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक वस्तु पर अल्लाह ही का आधिपत्य है और सब का वही मालिक है। एक व्यक्ति का क़ानून के अर्न्तगत किसी वस्तु पर आधिपत्य अर्थात् उसके मालिक होने के अधिकार एवं सम्पत्ति के हस्तांतरण और उसके प्रयोग को इस्लाम स्वीकार करता है तथा पूर्ण रूप से इसकी रक्षा भी करता है परन्तु यह समस्त आर्थिक प्रणाली सद्व्यवहार एवं सदाचार के नियमों पर आधारित है अर्थात् समाज के प्रत्येक भाग को सारी सम्पत्ति पर पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त है। इस आर्थिक प्रणाली के एक भाग को क़ानून का रूप दिया गया है तथा क़ानून की स्वीकृति द्वारा इसको प्रभावशाली बनाया गया है परन्तु इस का अधिकतर भाग इस लक्ष्य के साथ कि पूर्ण सदाचारिता एवं आध्यात्मिकता के लाभ समस्त मानव प्राणी के लिए प्राप्त किए जा सकें स्वतः अपने प्रयत्न द्वारा सुरक्षित किया जाता है।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ ۝
فَقُلْنَا يَٰٓـَٔادَمُ إِنَّ هَٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰ ۝
إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ۝
وَأَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ۝
طٰهٰ : ١١٧-١٢٠

(और यह भी याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों को कहा कि आदम (के जन्म पर धन्यवाद के रूप में अल्लाह) को सजदः करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सजदः किया, परन्तु उस ने इन्कार किया।

तो हम ने कहा कि हे आदम! निस्सन्देह यह (इब्लीस) तेरा और तेरे साथियों का शत्रु है। सो यह तुम दोनों (गिरोहों) को स्वर्ग से निकाल न दे, जिस के फलस्वरूप तू (और तेरा हर-एक साथी) विपत्ति में पड़ जाए।

निस्सन्देह इस स्वर्ग[1] में तेरे लिए यह नियत है कि तू भूखा और नंगा न रहे (और न तेरे साथी ही)।

और न तू प्यासा रहे तथा न धूप में जले। (ताहा ११७–१२०)

وَلَا تَأْكُلُوٓا أَمْوَٰلَكُم بَيْنَكُم بِالْبَٰطِلِ وَتُدْلُوا بِهَآ إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَٰلِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝
البقرة : ١٨٩

और तुम अपने (भाईयों के) धन परस्पर मिल-जुल कर झूठ और धोखे से मत खाओ और न उस धन को (इस उद्देश्य से) हाकिमों के पास ले जाओ ताकि तुम लोगों के धन का कुछ भाग जान-बूझ कर अनुचित ढंग से हड़प कर जाओ (अल्-बक़रः १८९)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً
عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ○

النساء : ٣٠

हे ईमानदारो ! तुम अपने धन अनुचित ढंग से आपस में न खाओ। हाँ ! यह उचित बात है कि (धन का लेना) आपस की अनुमति से व्यापार द्वारा हो और तुम अपनी हत्या अपने-आप न करो। निस्सन्देह अल्लाह तुम पर बार-बार दया करने वाला है। (अल्-निसा ३०)

जिहाद
ईश्वर की राह में प्रयत्नशील होना

जिहाद का अर्थ है कि अल्लाह की राह में अपनी मनोकामनाओं से युद्ध करते हुए निरन्तर प्रयत्नशील होना। इसका विभाजन तीन प्रकार से किया गया है :—

(क) शत्रु से युद्ध करना।

(ख) शैतान के साथ युद्ध करना।

(ग) अपनी मनोकामनाओं से युद्ध करना।

पवित्र क़ुर्आन-मजीद बताता है कि जब शत्रु से युद्ध आरम्भ हो जाए तो युद्ध इस ढंग से किया जाए कि युद्ध क्षेत्र में जान-माल की बहुत कम क्षति हो और यह भी कि शत्रुता एवं वैर को शीघ्रता-शीघ्र समाप्त करने की चेष्टा की जाए।

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ۝ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِم بِغَيْرِ حَقٍّ

और वे लोग जिन के साथ अकारण युद्ध किया जा रहा है उन्हें भी (अपने बचाव के लिए युद्ध करने की) अनुमति दी जाती है, क्योंकि उन पर अत्याचार किया गया है और अल्लाह उन की सहायता करने का सामर्थ्य रखता है।

إِلَّا أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيَنصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

الحج : ٤٠-٤١

(ये वे लोग हैं) जिन्हें उन के घरों से बिना किसी उचित कारण के केवल इतना कहने पर निकाल दिया गया कि अल्लाह हमारा रब्ब है यदि अल्लाह उन (इन्कार करने वालों) में से कुछ लोगों को दूसरों के द्वारा (शरारत से) न रोकता तो गिरजे एवं यहूदियों के उपासना-गृह और मस्जिदें जिन में अल्लाह के नाम की बहुत स्तुति होती है विनष्ट कर दिए जाते और अल्लाह निश्चय ही उस की सहायता करेगा जो उस (के धर्म) की सहायता करेगा। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा शक्तिशाली और सामर्थ्यवान है। (अल्-हज्ज ४०—४१)

لَّا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝

अल्लाह तुम्हें उन लोगों से भलाई और न्याय का व्यवहार करने से नहीं रोकता, जिन्हों ने धार्मिक मतभेद के कारण तुम्हारे साथ लड़ाई नहीं की तथा जिन्हों ने तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला। अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है।

إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي

अल्लाह तुम्हें केवल उन लोगों से (मित्रता करने से) रोकता है जिन्हों ने धार्मिक भेद-

الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوْا عَلٰٓى
اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ○
الممتحنة : ٩-١٠

भाव के कारण तुम्हारे साथ लड़ाई की और जिन्हों ने तुम्हें घरों से निकाला अथवा तुम्हारे निकालने के लिए तुम्हारे दूसरे शत्रुओं की सहायता की तथा जो लोग भी ऐसे लोगों से मैत्री रखें वे अत्याचारी हैं।
(अल्-मुम्तहिनः ९–१०)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ
تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ○
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ○
الصّف : ١١-١٢

हे मोमिनो! क्या मैं तुम्हें एक ऐसे व्यापार की सूचना दूँ जो तुम्हें पीड़ादायक अज़ाब से बचा लेगा।

(वह व्यापार यह है कि) तुम अल्लाह तथा उस के रसूल पर ईमान लाओ और अपने तन-मन-धन से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यदि तुम समझो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है। (अल्-सफ़ ११–१२)

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ
سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ○
العنكبوت : ٧٠

और वे लोग जो हम से मिलने का प्रयास करते हैं हम अवश्य ही उन्हें अपने रास्तों की ओर आने का सामर्थ्य प्रदान करेंगे और निस्सन्देह अल्लाह उपकार करने वालों के साथ है। (अल्-अन्कबूत ७०)

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ
دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ○
التوبة : ٢٠

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिजरत की फिर अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद किया वे अल्लाह के निकट बड़ा दर्जा रखते हैं और वे ही सफल होने वाले हैं।

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰي مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ

अल्लाह ने मोमिनों से उन की जानों और उन के मालों को (इस वादा पर) ख़रीद

وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا
عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَ
الْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ
فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ
وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

التوبة : ١١١

लिया है कि उन्हें जन्नत मिलेगी, क्योंकि वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं। अतः (या तो वह) अपने शत्रुओं को मार देते हैं या स्वयं मारे जाते हैं। यह एक ऐसा वादा है जिसे पूरा करना उस (अल्लाह) के लिए ज़रूरी है और तौरात एवं इञ्जील (में भी वर्णित किया गया है) तथा क़ुर्आन में भी और अल्लाह से बढ़ कर अपने वादा को पूरा करने वाला दूसरा कौन हो सकता है ? अतएव (हे मोमिनो !) अपने इस व्यापार पर प्रसन्न हो जाओ, जो तुम ने किया है और यही वह महान् सफलता है (जिस की मोमिनों से प्रतिज्ञा की गई है)। (अल्-तौब: २०|,१११)

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ
أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ وَ
كُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ
الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

النساء : ٩٦

मोमिनों में से ऐसे बैठ रहने वाले जिन्हें कोई कष्ट नहीं पहुँचा तथा (वे मोमिन जो) अपने जान-माल के साथ अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले हैं वह बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने अपने जान-माल के साथ जिहाद करने वालों को (पीछे) बैठ रहने वालों पर प्रधानता दी है और अल्लाह ने सब को ही भलाई का बचन दे रखा है और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बहुत बड़े प्रतिफल का बचन देकर पीछे बैठ रहने वालों पर (अवश्य ही) प्रधानता दी है। (अल्-निसा९६)

ईमान लाने वालों का चरित्र

पवित्र क़ुर्आन-मजीद अल्लाह पर पूर्ण विश्वास रखने की आवश्यकता को विस्तार पूर्वक वर्णन करता है और उस की सत्ता को सत्य सिद्ध करने की ओर प्रेरित करता है तथा क़ुर्आन-मजीद इस ओर भी ध्यान आकृष्ट कराता है कि अल्लाह अपनी वाणी को सर्वथा वह्य द्वारा उतारता है। यदि अल्लाह अपने गुणों का प्रगटन अपने नबी, रसूल, अवतारों एवं ईमान लाने वालों पर बन्द कर दे तो अल्लाह की सत्ता पर जो प्रबल विश्वास एवं आस्था है वह समाप्त हो जाएगा। अतः यह आवश्यक है कि जब तक मानव प्राणी की वंसज चलती रहेगी तब तक अल्लाह के वह्य का क्रम मानव प्राणी पर जारी रहेगा।

وَ الَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ لَا يَزْنُوْنَ ۚ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۙ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ۙ

और वे लोग ऐसे होते हैं कि अल्लाह के सिवा किसी दूसरे उपास्य को नहीं पुकारते तथा न किसी जान की हत्या करते हैं, जिसे अल्लाह ने सुरक्षिता प्रदान की हो, सिवाय (शरीअत के) अधिकार के और न व्यभिचार करते हैं तथा जो व्यक्ति ऐसा कुकर्म करेगा, वह अपने पाप का प्रतिफल देख लेगा।

उस के लिए क़ियामत के दिन अज़ाब अधिक किया जाएगा और वह उस में (पतित होकर) रहता चला जाएगा।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۗ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

सिवाय उस व्यक्ति के जिस ने तौबः कर ली और ईमान ले आया तथा ईमान के अनुकूल कर्म किए। अतः ये लोग ऐसे होंगे कि अल्लाह उन के पापों को नेकियों से बदल देगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और दयावान् है।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ۝

और जो व्यक्ति तौबः करे तथा उस तौबः के अनुकूल कर्म करे तो वह व्यक्ति वास्तविक रूप में अल्लाह की ओर झुकता है।

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ۝

और वे लोग भी (अल्लाह के भक्त हैं) जो झूठी गवाही नहीं देते और जब व्यर्थ बातों के पास से गुज़रते हैं तो (बिना उन में शामिल होने के) मान-मर्यादा के साथ चले जाते हैं।

وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا

और वे लोग भी कि जब उन्हें उन के रब्ब की आयतें याद दिलाई जाएँ तो वे उन के

عَلَيْهَا صُمًّا وَّ عُمْيَانًا ○
وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ
ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ
اِمَامًا ○
اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ
فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ○
قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْ لَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ
كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ○
الفرقان : ٦٩ - ٧٨

साथ अन्धों और बहरों का सा व्यवहार नहीं करते ।

और वे भी (रहमान के भक्त हैं) जो यह कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें अपनी पत्नियों की ओर से तथा सन्तान की ओर से आँखों की ठंढक प्रदान कर तथा हमें संयमी लोगों का इमाम[1] बना ।

ये वे लोग हैं जिन्हें उन की नेकी पर क़ायम रहने के कारण (स्वर्ग में) चौबारे दिए जाएँगे और उन्हें उस में आशीर्वाद दिया जाएगा तथा शान्ति के सन्देश पहुँचाए जाएँगे ।७६।

वे उस में रहते चले जाएँगे। वह (स्वर्ग) अस्थायी निवास-स्थान की दृष्टि से भी उत्तम है तथा स्थायी निवास-स्थान की दृष्टि से भी ।

(हे रसूल !) तू उन से कह दे कि मेरे रब्ब को तुम्हारी क्या आवश्यकता है, यदि तुम्हारी ओर से प्रार्थना (और क्षमा की याचना) न हो ? सो जब कि तुम ने (अल्लाह के सन्देश को) झुठला दिया तो अब उस का अज़ाब तुम से चिमटा ही रहेगा ।
(अल्-फ़ुर्क़ान ६९–७८)

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ
الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝

कामिल मोमिनों ने अपने उद्देश्य को पा लिया ।

वे (मोमिन) जो अपनी नमाज़ों में नम्रता का ढंग अपनाते हैं ।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝
اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ
فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝
فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝
الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝

المؤمنون : ٢-١١

और जो व्यर्थ बातों से बचते हैं।

और जो (विधिवत) ज़कात देते हैं।

और जो अपने शर्मगाहों (गुप्त अंगों) की रक्षा करते हैं।

सिवाय अपनी पत्नियों के या जिन के मालिक उन के दाहिने[1] हाथ हुए हैं। अतः ऐसे लोगों की किसी प्रकार की कोई निन्दा नहीं की जाएगी।

और जो लोग इस के सिवा किसी और बात की इच्छा करें तो वे लोग ज़्यादती करने वाले होंगे।

और वे लोग (अर्थात् कामिल मोमिन) जो अपनी अमानतों और प्रतिज्ञाओं का ध्यान रखते हैं।

और जो लोग अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं।

यही लोग असल वारिस हैं।

जो फ़िरदौस (स्वर्ग) के वारिस होंगे वे उस में सदैव रहते चले जाएँगे।
(अल्-मोमिनून २–१२)

स्त्री एवं पुरुष के लिए समानाधिकार

इस्लाम के प्रगटन से पूर्व स्त्री को समाज में निश्चित रूप से कोई अधिकार प्राप्त न था। केवल इस्लाम ही ऐसा धर्म है जिस ने प्रत्येक दृष्टि-कोण से ऐसे आदेश दिए हैं जिन के द्वारा स्त्री के अधिकारों की पूर्ण रूप से रक्षा की गई है और जीवन के आध्यात्मिक एवं धार्मिक क्षेत्र में स्त्री को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त हैं तथा उन्हें स्वतन्त्र रह कर अपने अधिकारों पर पूर्ण रूप से स्वामित्व प्राप्त है और उन के कर्त्तव्य एवं अधिकार को पवित्र धार्मिक विधान का एक हिस्सा घोषित किया गया है।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَ لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○

النحل : ٩٨

जो कोई मोमिन होने की अवस्था में भले एवं उचित कर्म करेगा वह पुरुष हो या स्त्री, निश्चय ही हम उसे पवित्र जीवन प्रदान करेंगे और हम उन सभी लोगों को उन के अच्छे कर्मों के अनुसार अच्छा बदला देंगे। (अल्-नहल ९८)

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَ لَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ○

النساء : ١٢٥

और जो लोग चाहे पुरुष हों अथवा स्त्रियाँ मोमिन होने की अवस्था में नेक काम करेंगे तो वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे तथा उन पर खजूर की गुठली के छेद के बराबर (तनिक) भी अत्याचार नहीं किया जाएगा। (अल्-निसा१२५)

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَ الصَّآئِمِيْنَ وَ الصّٰٓئِمٰتِ وَ الْحٰفِظِيْنَ

निस्सन्देह कामिल मुसलमान पुरुष और कामिल मुसलमान महिलाएँ तथा कामिल आज्ञाकारी पुरुष और कामिल आज्ञाकारी महिलाएँ और कामिल सच बोलने वाले पुरुष एवं कामिल सच बोलने वाली महिलाएँ और कामिल धैर्यवान पुरुष एवं कामिल धैर्यवान महिलाएँ तथा कामिल रूप में विनम्रता प्रकट करने वाले पुरुष और कामिल रूप में विनम्रता प्रकट करने वाली महिलाएँ तथा कामिल दान देने वाले पुरुष और कामिल दान देने वाली महिलाएँ तथा कामिल ब्रतधारी पुरुष और कामिल ब्रतधारिणी महिलाएँ और पूर्ण रूप से अपने गुप्त अंगों की रक्षा करने वाले पुरुष और पूर्ण रूप से अपने गुप्त अंगों की रक्षा करने वाली महिलाएँ और अल्लाह को बहुत याद

فُرُوْجَهُمْ وَ الْحٰفِظٰتِ وَ الذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ○

الاحزاب : ٣٦

करने वाले पुरुष एवं अल्लाह को बहुत याद करने वाली महिलाएँ, इन सब के लिए अल्लाह ने बख़्शिश (क्षमा) के सामान और बहुत बड़ा पुरस्कार तय्यार कर रखा है।
(अल्-अहज़ाब ३६)

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ○

المؤمن : ٤١

जो व्यक्ति बुरे कर्म करेगा उसे उस के अनुसार फल मिलेगा और जो कोई ईमान के अनुकूल कर्म करेगा चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री, परन्तु शर्त यह है कि वह ईमान में सच्चा हो तो वह तथा उस के साथी स्वर्ग में जाएँगे और उन्हें उस में बिना हिसाब ही पुरस्कार दिए जाएँगे। (अल्-मोमिन ४१)

ब्याज एवं मदिरापान की निषेधात्मक शिक्षाएँ

क़ुर्आन-मजीद में ब्याज के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है वह "रिबा" है जो अंग्रेज़ी भाषा Interest का समानार्थक नहीं है जैसा कि साधारणतया समझा जाता है। रिबा-ब्याज निषेध है क्योंकि यह सम्पत्ति को सीमित कर के कुछ हाथों में इकट्ठा कर देता है और अन्य लोगों के साथ भलाई का वर्ताव करने से रोक देता है। वह धन जो ऋण के रूप में दिया जाता है ऋण देने वाला ऋण लेने वाले की दैनीय अवस्था से अनुचित लाभ उठाता है।

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا
كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ
الْمَسِّ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ
مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَ حَرَّمَ
الرِّبٰوا ۚ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ
فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ۚ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَ
مَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝
يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ۗ وَاللّٰهُ
لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا

जो लोग ब्याज खाते हैं वे बिल्कुल उसी तरह खड़े होते हैं, जिस तरह वह व्यक्ति खड़ा होता है जिस पर शैतान[2] (अर्थात् पागलपन) का आक्रमण हुआ हो। इस (अवस्था) का यह कारण है कि वे कहते (रहते) हैं कि व्यापार भी तो बिल्कुल ब्याज के समान है, जब कि अल्लाह ने व्यापार को हलाल (जायज़) ठहराया है और ब्याज को हराम। अतः (याद रखो कि) जिस व्यक्ति के पास उस के रब्ब की ओर से कोई उपदेश की बात आए तथा वह (उसे सुनकर उस का विरोध करने से) रुक जाए तो जो (लेन-देन) वह पहले कर चुका है उस का लाभ उसी को है और उस का मामला अल्लाह के सुपुर्द है और जो लोग फिर वही काम करें तो वे (अवश्य ही) आग में पड़ने वाले हैं। वे उस में पड़े रहेंगे।

अल्लाह ब्याज को मिटाएगा[1] और सद्क़ात (दान) को बढ़ाएगा और अल्लाह किसी भी इन्कार करने वाले एवं महापापी को पसन्द नहीं करता।

जो लोग ईमान लाते हैं तथा अच्छे और भले काम करते हैं तथा नमाज़ को क़ायम रखते हैं और ज़कात देते हैं, निस्सन्देह उन के लिए उन के रब्ब के पास उन का प्रतिफल (सुरक्षित) है और उन्हें न तो किसी प्रकार का भय होगा और न वे चिन्तित होंगे।

हे ईमान वालो! अल्लाह के लिए संयम धारण करो और उस से डरो और यदि तुम

بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ○
فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ
وَ رَسُوْلِهٖ ۚ وَ اِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ
اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ○
وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ۚ وَ
اَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ○
وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ
تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ○

البقرة : ٢٧٦-٢٨٢

मोमिन हो तो ब्याज (के हिसाब) में जो कुछ बाकी रह गया हो उसे छोड़ दो।

और यदि तुम ने ऐसा न किया तो अल्लाह और उस के रसूल की ओर से (होने वाले) युद्ध को यक़ीनी समझ लो (और उस के लिए सावधान हो जाओ) यदि तुम ब्याज से तौबः कर लो तो (तुम्हारी कोई हानि नहीं क्योंकि) अपना मूल धन प्राप्त करने का तुम्हें अधिकार है। इस अवस्था में न तुम किसी पर अत्याचार करोगे और न तुम पर कोई अत्याचार होगा।

यदि कोई ऋण लेने वाला तंगी में हो तो अच्छी हालत होने तक उसे छूट देनी होगी और यदि तुम समझ-बूझ रखते हो तो समझ लो कि तुम्हारा (उसे मूल धन भी) दान के (रूप में) दे देना सब से अच्छा (काम) है।

और उस दिन से डरो कि जिस में तुम्हें अल्लाह की ओर लौटाया जाएगा, फिर प्रत्येक व्यक्ति को जो उस ने कमाया होगा पूरा-पूरा दे दिया जाएगा तथा उन पर कुछ भी अत्याचार नहीं किया जाएगा।
(अल्-बक़र: २७६-२८२)

भविष्यवाणियाँ

क़ुर्आन-मजीद की अनेक सूरतें जो शुरू में उतरीं क़ुर्आन-मजीद की मूल शिक्षाओं एवं सिद्धान्तों के प्रमाण में विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक दृश्य को पेश करती हैं। इन सूरतों के कुछ भाग भविष्यवाणियों के रूप में हैं जो अनेक शताब्दियों में पूरे होते देखे गए हैं। अनेक बार शब्दों के अनुकूल ही प्रत्यक्ष रूप में भविष्यवाणियाँ पूरी हुई हैं और कई बार रूपक के रूप में पूरी हुई हैं और कभी-कभी शाब्दिक तथा रूपक दोनों तरह से पूरी हुई हैं जैसा कि इस से पूर्व स्पष्ट किया गया है कि इस किताब का नाम "क़ुर्आन" रखा जाना एक बहुत बड़ी भविष्यवाणी है जिसका प्रत्यक्ष रूप में पूरा होना भिन्न-भिन्न समय में देखा गया है।

सब से पहली वह्य ने विद्या से सुसज्जित उस समय के आने की घोषणा की जिस में लेखनी का अधिक से अधिक प्रयोग होना था।

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۝
بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۝

الرحمٰن : ٢٠-٢١

उस ने दो समुद्रों को इस प्रकार चलाया है कि वे एक समय में आपस में मिल जाएँगे ।

(इस समय) उन के बीच एक ओट है जिस के कारण वे एक-दूसरे में दाख़िल नहीं हो सकते ।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ
تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ
لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ
فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝

الرحمٰن : ٣٤-٣٦

हे जिन्न और मानव-दल ! यदि तुम यह शक्ति रखते हो कि आसमानों तथा ज़मीन के किनारों से निकल भागो तो निकल कर दिखा दो । तुम बिना प्रमाण के कदापि नहीं निकल सकते ।

अत: बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।

तुम पर अग्नि कीं एक ज्वाला और ताँबा भी गिराया जाएगा । अत: तुम दोनों कदापि ग़ालिब नहीं आ सकते ।
(अल्-रहमान २०–२१, ३४–३६)

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۝
وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝
وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۝
وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۝

जब आसमान फट जाएगा ।

और अपने रब्ब की बात सुनने के लिए कान धरेगा और यही उस का कर्त्तव्य है ।

और ज़मीन फैला दी जाएगी ।

और जो कुछ उस में है वह उसे निकाल फेंकेगी तथा खाली हो जाएगी ।

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝

الانشقاق : ٢-٦

और अपने रब्ब की बात सुनने के लिए कान धरेगी[3] और यही उस पर फर्ज़ है।
(अल्-इन्शिक़ाक़ २-६)

وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝

التكوير : ٥

और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ छोड़ दी जाएँगी।

وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝

التكوير : ٨

और जब (विभिन्न प्रकार के) लोग एकत्रित किए जाएँगे।

وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝

और जब किताबें फैला दी जाएँगी।

وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝

التكوير : ١١-١٢

और जब आसमान की खाल उतारी जाएगी।(अल्-तकवीर ५,६,११-१२)

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝

जब ज़मीन को अच्छी तरह हिला दिया जाएगा।

وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝

और ज़मीन अपना बोझ निकाल कर फेंक देगी।

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝

और मनुष्य कह उठेगा कि इसे क्या हो गया है।

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝

उस दिन वह अपनी (सब गुप्त) ख़बरों को वर्णन कर देगी।

بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝

इसलिए कि तेरे रब्ब ने उस (ज़मीन) के बारे में वह्य कर रखी है।

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝

उस दिन लोग विभिन्न दलों के रूप में एकत्रित होंगे, ताकि अपनी-अपनी कोशिशों के परिणामों को देख लें।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝

फिर जिस ने कण-भर भी भलाई की होगी वह उस (के प्रतिफल) को देख लेगा।

وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝
الزلزال : ۳-۹

और जिस ने कण-भर भी बुराई की होगी वह उस (के परिणाम) को देख लेगा। (अल्-ज़िल्ज़ाल|२-९)

وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ۝
فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝
لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ۝
طٰهٰ : ۱۰۶-۱۰۸

और वे तुझ से पर्वतों के बारे में पूछते हैं। तू उन्हें कह दे कि मेरा रब्ब उन्हें उखाड़ कर फेंक देगा।

और उन्हें एक सपाट मैदान बना कर छोड़ देगा।

कि तू उन में न तो कोई मोड़ देखेगा और न कोई ऊँचाई ही। (ताहा|१०६-१०८)

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ۝
النمل : ۸۳

और जब उन के सर्वनाश की भविष्य-वाणी पूरी हो जाएगी तो हम उन के लिए धरती से एक कीटाणु निकालेंगे जो उन को काटेगा। इस का कारण यह है कि लोग हमारे निशानों पर विश्वास नहीं रखते थे। (अल्-नम्ल ८३)

فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝
وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝
وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝
القيٰمة : ۸-۱۰

सो जब आँखें पथरा जाएँगी।

और चाँद को ग्रहण लग जाएगा।

और सूर्य एवं चन्द्रमा को (ग्रहण लगने की अवस्था में) एकत्रित कर दिया जाएगा।१०। (अल्-क़ियामत|८-१०)

प्रकृति से सम्बन्धित निरीक्षण

क़ुर्आन-मजीद की विशेषताओं में से एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यद्यपि यह चौदह सौ वर्ष पूर्व उतरा परन्तु इस में प्रकृति के सम्बन्ध में कोई ऐसी बात नहीं की जो भविष्य में होने वाली खोज से असत्य सिद्ध हो। आधुनिक विज्ञान की खोज क़ुर्आन-मजीद की बहुत सी आयतों की पुष्टि करती करती है। जब कि कई दूसरी आयतें प्रकृति के अन्य दृश्यों की ओर संकेत करती हैं जिन की खोज अभी शेष है।

क़ुर्आन-मजीद में प्रकृति के सम्बन्ध में अनेक उलझी हुई बातों में से कुछ को बताने के लिए उदाहरण के रूप में कुछ आयतों का निर्वाचन किया गया है।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ۭ وَهُوَ عَلٰي جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَاۗءُ قَدِيْرٌ ○

الشوریٰ : ۲۹

और आसमानों तथा ज़मीन की उत्पत्ति तथा इन दोनों के बीच उस ने जो जीवधारी फैलाए हैं सब उस के निशानों में से हैं तथा जब वह चाहेगा तो इन सब को इकट्ठा करने पर सामर्थ्यवान होगा। (अल्-शूरा ३०)

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ۭ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ○

الانعام : ۹۹

और वही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया है, फिर उस ने तुम्हारे लिए एक अस्थायी निवास-स्थान एवं एक लम्बे समय के लिए निवास-स्थान नियुक्त किया है। हम ने बुद्धिमानों के लिए प्रमाण खोल-खोल कर बता दिए हैं। (अल्-अन्आम ९९)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَاۗءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَاۗءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ○

النّسآء : ۲

हे लोगो ! अपने रब्ब के लिए संयम धारण करो जिस ने तुम्हें एक ही जान से पैदा किया और उस की जिन्स (जाति) से ही उस का जोड़ा पैदा किया तथा उन दोनों में से बहुत बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुष (पैदा कर के) संसार में फैलाए और अल्लाह के लिए (इसलिए भी) संयम धारण करो कि तुम इस के द्वारा परस्पर प्रश्न करते हो एवं विशेष कर निकट-सम्बन्धियों (की समस्याओं) में संयम से काम लो। निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है। (अल्-निसा २)

هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاۗءُ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

آل عمران : ۷

वही है जो गर्भाशयों (माँ के पेट) में जैसी चाहता है तुम्हें वैसी ही शक्ल और सूरत देता है। उस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (आले-इम्रान ७)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۙ

ابراهيم : ٢٠

(हे सम्बोधित !) क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमानों तथा ज़मीन की रचना हक़ एवं हिक्मत के साथ की है। यदि वह चाहे तो तुम्हारा सर्वनाश कर दे तथा तुम्हारे स्थान पर कोई और नई मख़लूक़ ले आए ॥(इब्राहीम २०)

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ۝

النمل : ٨٩

और तू पर्वतों को ऐसी दशा में देखता है कि वे अपने स्थान पर जमे हुए हैं, हालाँकि वे बादलों की तरह चल रहे हैं। यह अल्लाह की कारीगरी है जिस ने प्रत्येक वस्तु को सुदृढ़ बनाया है। वह तुम्हारे कर्मों को ख़ूब अच्छी तरह जानता है। (अल्-नम्ल/८९)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ

हे लोगो ! यदि तुम्हें दूसरी बार उठाए जाने के बारे में सन्देह में हो तो (याद रखो) हम ने तुम्हें सर्व प्रथम मिट्टी से पैदा किया था, फिर वीर्य्य से, फिर उन्नति दे कर एक ऐसी अवस्था से जो चिपट जाने का गुण रखती थी, फिर ऐसी अवस्था से कि वह माँस की एक बोटी के समान थी, वह कुछ समय तक तो पूर्ण बोटी के रूप में रही तथा कुछ समय तक अपूर्ण बोटी के रूप में ताकि हम तुम्हारे ऊपर (वास्तविकता) खोल दें और हम जिस वस्तु को चाहते हैं उसे गर्भाशयों में एक निश्चित समय तक क़ायम कर देते हैं, फिर हम तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालते हैं (फिर बढ़ाते जाते हैं) जिस का परिणाम यह निकलता है कि तुम अपनी मज़बूती की आयु को पहुँच जाते हो

وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِن بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ○

الحج: ٦

और तुम में से कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपनी साधारण आयु तक पहुँच कर मरते हैं तथा कुछ ऐसे भी होते हैं जो बुढ़ापे की अन्तिम सीमा को पहुँच जाते हैं, ताकि बहुत सा ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् ज्ञान से बिल्कुल कोरे हो जाएँ, और तू ज़मीन को देखता है कि वह कभी-कभी अपनी सारी शक्ति खो बैठती है। फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह जोश में आ जाती है और बढ़ने लगती है एवं समस्त-प्रकार की सुन्दर खेतियाँ उगाने लगती है।
(अल्-हज्ज ६)

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ○

النحل: ٩

और उस ने घोड़ों, खच्चरों एवं गदहों को भी तुम्हारी सवारी और शोभा (तथा प्रतिष्ठा) के लिए पैदा किया है तथा वह भविष्य में भी (तुम्हारे लिए सवारी के दूसरे साधन) पैदा करेगा, जिन्हें तुम अभी नहीं जानते।
(अल्-नहल ९)

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ۝

वह अल्लाह बहुत बरकत वाला है जिस के हाथ में साम्राज्य है और वह प्रत्येक इरादा के पूरा करने का सामर्थ्य रखता है।

उस ने मृत्यु तथा जीवन को इसलिए पैदा किया है ताकि वह तुम्हारी परीक्षा करे कि तुम में से कौन अधिक अच्छे कर्म करने वाला है। वह प्रभुत्वशाली और बहुत क्षमा करने वाला है।

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ مَا تَرٰى
فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ
هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝

الملك : ٣-٤

वही है जिस ने क्रमशः ऊपर-तले सात आसमान बनाए हैं और तू रहमान (ख़ुदा) की रचना में कोई त्रुटि नहीं देखता और तू अपनी आँख को इधर-उधर घुमा-फिरा कर अच्छी तरह से देख ले। क्या तुझे अल्लाह की रचना में कहीं भी कोई त्रुटि दिखाई देती है ?।(अल्-मुल्क २–४)

पवित्र क़ुर्आन-मजीद में सिखाई गई कुछ प्रार्थनाएँ

अल्लाह और अल्लाह से सम्बन्ध रखने वाले मानव के बीच प्रार्थना एक अटूट, अमिट एवं जीवन प्रदान करने वाला सम्बन्ध है। अल्लाह की दया एवं कृपा सब से पहले एक व्यक्ति को अल्लाह की ओर खींचती है। जो मनुष्य धन्यवाद करते हुए सहृदय अल्लाह को पुकारता है तो अल्लाह उस के निकट आ जाता है। दुआ एवं प्रार्थना में यही सम्बन्ध अपने अन्दर एक विशेषता पैदा कर लेता है तथा वह एक विशेष लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। वे लोग जो आध्यात्मिक अनुभव रखते हैं एवं उन के परिणाम से अवगत होते हैं वे अपने बार-बार के अनुभव से यह जानते हैं कि पूर्ण विश्वास रखने वाला दुआ एवं प्रार्थना द्वारा निर्मायक शक्ति प्राप्त कर लेता है।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ○

البقرة: ١٨٧

और (हे रसूल !) जब तुझ से मेरे बन्दे (भक्त) मेरे बारे में पूछें तो (तू उत्तर दे कि) मैं (उन के) पास ही हूँ। जब दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं उस की दुआ को क़ुबूल करता हूँ। अतएव चाहिए कि वे मेरी आज्ञाओं का पालन करें तथा मुझ पर ईमान लाएँ ताकि वे हिदायत पाएँ।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُولُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○

أُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۖ وَاللّٰهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ○

البقرة: ٢٠٢-٢٠٣

और उन में से कुछ (लोग ऐसे भी होते) हैं जो कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें इस संसार (के जीवन) में भी सफलता प्रदान कर तथा आख़िरत में भी सफलता दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

यही वे लोग हैं जिन के लिए उन के नेक कामों के कारण (बदले के रूप में) एक बहुत बड़ा हिस्सा (निश्चित) है और अल्लाह शीघ्र ही लेखा चुका देता है।

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۖ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِنْ نَّسِينَآ أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا

अल्लाह किसी पर भी उस की शक्ति से अधिक कोई ज़िम्मेदारी नहीं डालता। जो उस ने अच्छा काम किया हो वह उस के लिए (लाभदायक) होगा और जो उस ने बुरा काम किया होगा वह उसी पर (विपत्ति बन कर) पड़ेगा। (वे यह भी कहते हैं कि) हे हमारे रब्ब ! यदि हम से कभी कोई भूल हो जाए अथवा हम ग़लती कर बैठें तो हमें दण्ड न दीजियो। हे हमारे रब्ब ! और तू हमारे ऊपर (उस प्रकार) ज़िम्मेदारी न डालियो जिस प्रकार तू ने उन लोगों पर डाली थी, जो हम से पहले हो चुके हैं। हे

بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ أَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

البقرة: ٢٨٧

हमारे रब्ब ! और इसी प्रकार हम से (वह बोझ) न उठवाना जिस के उठाने की हमें शक्ति नहीं और हमें क्षमा कर एवं बख़्श दे और हम पर दया कर, क्योंकि तू हमारा स्वामी है। अतः इन्कार करने वाले लोगों के मुक़ाबिले में हमारी सहायता कर।
(अल्-बक़र: १८७, २०२-२०३, २८७)

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهٗ ۚ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْإِيْمَانِ

निस्सन्देह आसमानों तथा ज़मीन की सृष्टि में और रात-दिन के आगे-पीछे आने में बुद्धिमानों के लिए अनेक निशान हैं।

(वे बुद्धिमान) जो खड़े और बैठे तथा अपने पहलुओं पर लेटे अल्लाह को याद करते रहते हैं और आसमानों तथा ज़मीन की सृष्टि के बारे में सोच-विचार से काम लेते हैं (तथा कहते हैं कि) हे हमारे रब्ब ! तूने यह (संसार) व्यर्थ पैदा नहीं किया। तू (ऐसे निरुद्देश्य काम करने से) पवित्र है। अतः तू हमें (नरक की) आग के अज़ाब से बचा (और हमारे जीवन को भी निरुद्देश्य बनने से बचा)।

हे हमारे रब्ब ! जिसे तू (नरक की) आग में डालेगा, निस्सन्देह उसे तूने अपमानित कर दिया तथा अत्याचारियों का कोई भी सहायक नहीं होगा।

हे हमारे रब्ब ! निस्सन्देह हम ने एक ऐसे पुकारने वाले की आवाज़ सुनी है जो ईमान लाने की ओर आमन्त्रित करता है कि अपने रब्ब पर ईमान लाओ। अतः हम ईमान ले

آنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۚ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ
الْاَبْرَارِ ۝
رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا
تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
الْمِيْعَادَ ۝
فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَاۤ اُضِيْعُ عَمَلَ
عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ
بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ
دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا
لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ثَوَابًا
مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ
الثَّوَابِ ۝

آل عمران : ۱۹۱-۱۹۶

आए। इसलिए हे हमारे रब्ब ! तू हमारे अपराध क्षमा कर और हमारी बुराइयाँ मिटा दे और हमें सदाचारी व्यक्तियों के साथ (मिला कर) मौत दे।

और हे हमारे रब्ब ! हमें वह कुछ दे जिस की तूने अपने रसूलों के द्वारा हम से प्रतिज्ञा की है तथा क़ियामत के दिन हमें अपमानित न करना। तू अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध कदापि नहीं करता।

सो उन के रब्ब ने (यह कहते हुए) उन की (प्रार्थना) सुन ली कि मैं तुम में से किसी कर्त्ता के कर्म को नष्ट नहीं करूँगा, भले ही वह पुरुष हो या स्त्री। तुम एक-दूसरे से (सम्बन्ध रखने वाले) हो। अतः जिन्हों ने हिजरत (स्वदेश-त्याग) की और उन्हें उन के घरों से निकाला गया तथा मेरी राह में दुःख दिया गया और उन्हों ने युद्ध किया और मारे गए, निस्सन्देह मैं उन के पापों के प्रभाव को उन के शरीर से मिटा दूँगा और निस्सन्देह मैं उन्हें ऐसे बागों में दाख़िल करूँगा, जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। (यह सब कुछ) अल्लाह की ओर से प्रतिफल के रूप में मिलेगा और अल्लाह तो वह है कि जिस के पास सब से उत्तम प्रतिफल है। (आले-इम्रान १९१–१९६)

पवित्र क़ुर्आन-मजीद की कुछ छोटी-छोटी सूरतें जो सरलता पूर्वक याद की जा सकें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
وَالْعَصْرِ ۝
اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝
اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا
بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ○

العصر: ١-٤

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।

मैं (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) के समय को गवाही के रूप में पेश करता हूँ।

कि निस्सन्देह (रसूलों और पैग़म्बरों का विरोधी) मनुष्य सदा ही घाटे में रहता है।

परन्तु वे लोग जो (रसूलों पर) ईमान ले आए और फिर उन्हों ने हालात के अनुसार अच्छे कर्म किए और सच्चाई के सिद्धान्तों पर क़ायम रहने का एक-दूसरे को उपदेश दिया और (सामने आने वाली कठिनाइयों पर) धैर्य धारण करने की एक-दूसरे को प्रेरणा देते रहे (ऐसे लोग कभी भी घाटे में नहीं पड़ सकते। (अल्-अस्र १–४)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝
لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।

(हम हर समय के मुसलमान से कहते हैं कि (तू (अपने समय के इन्कार करने वालों से) कहता चला जा कि सुनो ! हे इन्कार करने वालो।२।

मैं तुम्हारे ढंग के अनुसार भक्ति नहीं करता।

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝
وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝
وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝
لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ○

الكٰفرون : ١-٧

और न तुम मेरे ढंग के अनुसार भक्ति करते हो।

और न मैं उन की उपासना करता हूँ जिन की तुम उपासना करते चले आए हो।

और न तुम उस की उपासना करते हो जिस की मैं उपासना कर रहा हूँ।

(उक्त घोषणा से यह परिणाम निकलता है कि) तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिए (काम करने का एक ढंग नियत करता) है और मेरा धर्म मेरे लिए (दूसरा ढंग काम करने का निश्चित करता है)। (अल्-काफ़िरून १—७)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝
وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ
اَفْوَاجًا ۝

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।

जब अल्लाह की सहायता और पूर्ण विजय आ जाएगी।

और तू यह देख लेगा कि अल्लाह के धर्म में लोग दलों-के-दल दाख़िल होंगे।

उस समय तू अपने रब्ब की स्तुति के साथ-साथ उस की पवित्रता का यशोगान करने में लगा रहियो और (मुसलमानों की शिक्षा-दीक्षा में जो त्रुटियाँ हुई हों उन पर) उस ख़ुदा से

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ○

النصر : ١-٤

पर्दा डालने की प्रार्थना कीजियो। निस्सन्देह वह अपने बन्दे की ओर रहमत और दयालुता के साथ लौट-लौट कर आने वाला है। (अल्-नस्र १-४)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

الاخلاص : ١-٥

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।

(हम हर युग के मुसलमान को आदेश देते हैं कि) तू (दूसरे लोगों से) कहता चला जा कि (वास्तविक) बात यह है कि अल्लाह अपनी सत्ता में अकेला है।

अल्लाह वह (सत्ता) है जिस के सब मुहताज हैं (और वह स्वयं किसी का मुहताज नहीं)।

न उस ने किसी को जना तथा न वह जना गया है।

और उस के गुणों में कोई भी उस का साझी नहीं। (अल्-इख़लास १-५)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ
مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ
وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ
وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۙ
وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

الفلق : ١-٦

(हम हर युग के मुसलमान से कहते हैं कि) तू (दूसरे लोगों से) कहता चला जा कि मैं सारी मख़्लूक़ के रब्ब से उस की शरण माँगता हूँ ।

उस की हर मख़्लूक़ की (व्यक्त और अव्यक्त) बुराई से (बचने के लिए) ।

और अन्धकार करने वाले की हर शरारत से बचने के लिए जब कि वह अंधेरा कर देता है ।

और समस्त ऐसे प्राणियों की शरारत से बचे रहने के लिए भी जो आपस के सम्बन्धों की गाँठ में (आपसी सम्बन्ध तोड़वाने के विचार से) फूँके मारते हैं ।

और प्रत्येक ईर्ष्या करने वाले की शरारत से भी जब वह ईर्ष्या करने पर तुल जाता है ।
(अल्-फ़लक़ १-६)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूं) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।

(हम हर युग के मुसलमान से कहते हैं कि) तू (दूसरे लोगों को) कहता चला जा कि मैं समस्त मानव प्राणी के रब्ब से (उस की) शरण माँगता हूँ ।

مَلِكِ النَّاسِ ۙ
إِلٰهِ النَّاسِ ۙ
مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ
الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۙ
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ○
الناس: ١-٧

वह रब्ब जो समस्त मानव-समाज का सम्राट भी है।

और समस्त मानव-जाति का उपास्य[2] भी है।

मैं उस की शरण माँगता हूँ हर-एक भ्रम डालने वाले की शरारत से जो (हर प्रकार के भ्रम डाल कर) पीछे हट जाता है।

और जो मानव-जाति के दिलों में शंकाएँ पैदा कर देता है।

चाहे वह (उपद्रवकारी) छिपी रहने वाली सत्ताओं में से हो और चाहे साधारण मनुष्यों में से हो।/(अल्-नास १-७)

In this book some selected verses

of

Holy Quran

about basic and fundamental subjects

of

Islam

have been translated

This translatton has been done

by

ALHAJJ BASHIR AHMAD DEHLVI

Scholar in Sanskrit and Arabic

&

BASHIR AHMAD TAHIR DWEVEDI

Moulvi Fazil